उत्तर प्रदेश सरकार

बेसिक शिक्षा विभाग, उत्तर प्रदेश की मासिक पत्रिका

प्रेरणा

उत्तर प्रदेश बेसिक शिक्षा विभाग की मासिक पत्रिका

वर्ष 2 | प्रथम अंक | जनवरी-2021

सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

(23 जनवरी, 1897–18 अगस्त, 1945)

"याद रखिये सबसे बड़ा अपराध
अन्याय सहना और गलत के साथ समझौता करना है।"

–सुभाष चन्द्र बोस

125वीं जयन्ती पर शत्–शत् नमन

सर्व शिक्षा अभियान

सब पढ़ें सब बढ़ें

बेसिक शिक्षा विभाग, उत्तर प्रदेश की मासिक पत्रिका

प्रेरणा

वर्ष 2 | प्रथम अंक | जनवरी, 2021

बेसिक शिक्षा विभाग, उत्तर प्रदेश

विद्या भवन, निशातगंज, लखनऊ

ईमेल : prernapatrikabasicedu@gmail.com

फोन नं. : 0522-2780391

संरक्षक

डॉ. सतीश चन्द्र द्विवेदी
मा. राज्य मंत्री, (स्वतंत्र प्रभार)
बेसिक शिक्षा, उत्तर प्रदेश

सह संरक्षक

श्रीमती रेणुका कुमार
आई.ए.एस.
अपर मुख्य सचिव, बेसिक शिक्षा,
उत्तर प्रदेश शासन

निर्देशन

श्री विजय किरन आनन्द
आई.ए.एस.
महानिदेशक
स्कूल शिक्षा, उत्तर प्रदेश

प्रधान सम्पादक

डॉ. सर्वेन्द्र विक्रम बहादुर सिंह
शिक्षा निदेशक (बेसिक)
उत्तर प्रदेश

नोडल अधिकारी,

श्री राजेश कुमार शाही
सहा. उप निदेशक,
मध्यान्ह भोजन प्राधिकरण

सम्पादक

डॉ. के.बी. त्रिवेदी

सम्पादक मण्डल

1. निदेशक, एस.सी.ई.आर.टी., उ.प्र. लखनऊ
2. निदेशक साक्षरता, साक्षरता निदेशालय, उ.प्र. लखनऊ
3. श्री मुमताज अहमद, वित्त नियन्त्रक म.भो.प्रा., उ.प्र. लखनऊ
4. डॉ. पवन कुमार सचान, प्राचार्य डायट, लखनऊ
5. श्री गुरमिन्दर सिंह, सलाहकार समग्र शिक्षा अभियान, लखनऊ

प्रेरणा पत्रिका प्रकाशन सामग्री संकलन समिति

1. श्रीमती दीपा तिवारी, सहायक निदेशक, एस.सी.ई.आर.टी., लखनऊ — अध्यक्ष
2. श्री राजेश कुमार शाही, सहा. उप निदेशक, म.भो.प्रा., उ.प्र. लखनऊ — सदस्य
3. श्री गुरमिन्दर सिंह, सलाहकार, समग्र शिक्षा अभियान लखनऊ — सदस्य
4. श्री बाल गोबिन्द मौर्य, वरिष्ठ प्रवक्ता डायट लखनऊ — सदस्य
5. श्रीमती पूनम उपाध्याय, प्रवक्ता डायट, लखनऊ — सदस्य

प्रेरणा पत्रिका के वितरण सम्बन्धी समिति

1. श्री अब्दुल मुबीन, सहायक निदेशक, बेसिक शिक्षा निदेशालय लखनऊ — अध्यक्ष
2. श्री संजय कुमार शुक्ल, प्रशासनिक अधिकारी, समग्र शिक्षा अभियान लखनऊ — सदस्य
3. श्रीमती पुष्पा रंजन, प्रशासनिक अधिकारी, एस.सी.ई.आर.टी. लखनऊ — सदस्य

टंकण सहयोग

1. श्री संजय कुमार, कम्प्यूटर आपरेटर, म.भो.प्रा., लखनऊ
2. कु. दिव्यांशी दीक्षित, कम्प्यूटर आपरेटर, म.भो.प्रा., लखनऊ

विषय–सूची

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ सं.
1.	मा. बेसिक शिक्षा राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) द्वारा विकल्प पोर्टल का लोकार्पण	5
2.	गणतंत्र दिवस के अवसर पर मा. बेसिक शिक्षा राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) का संदेश	7
3.	मा. बेसिक शिक्षा राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) द्वारा जनपद सिद्धार्थनगर में झण्डारोहण	9
4.	पुरातन छात्र सम्मान समारोह – एक नई पहल	10
5.	परिषदीय विद्यालयों में गणतंत्र दिवस समारोह	11
6.	फर्रुखाबाद : बेसिक शिक्षा के नये आयाम	12
7.	आपरेशन कायाकल्प का नया आयाम : हमारा विद्यालय हमारा गौरव	14
8.	शिक्षा सुरक्षा सशक्तिकरण और स्वावलम्बन को मिली नई ऊँचाई	16
9.	परिषदीय विद्यालयों के पाठ्यक्रमों पर आधारित वीडियो/सीडी का निर्माण	19
10.	आदर्श विद्यालय जहाँ विदेशों से भी लोग शिक्षा व्यवस्था देखने आते हैं	20
11.	एक स्कूल जहाँ ''नो एडमिशन'' का बोर्ड लगाना पड़ता है	22
12.	निजी विद्यालय को मात देता परिषदीय विद्यालय	23
13.	रिमझिम फुहारें और अपना विद्यालय (कविता)	24
14.	कठिन परिश्रम और संघर्ष ने बदल दी विद्यालय की तस्वीर	25
15.	श्यामपट्ट (कविता)	26
16.	शिक्षा के साथ–साथ खेलों में भी उत्कृष्ट	27
17.	आपदा को अवसर में बदलता एक विद्यालय	29
18.	बच्चों को पसन्द आ रही है नई तकनीक	31
19.	कोरोना काल में जन जागरूकता की अनोखी मिसाल	32
20.	ग्राम प्रधान ने बदल दी विद्यालय की सूरत	33
21.	Improving Science Teaching Skills of Prospective Teachers' Using 5E Model	34
22.	आधुनिक समाज में लैंगिक असमानता एक अभिशाप	37
23.	वर्तमान बेसिक शिक्षा और चुनौतियाँ	39
24.	अधिगम को स्थायी बनाती है शिक्षण सहायक सामग्री	40
25.	प्रेरणा	41
26.	मोहल्ला क्लास : बच्चों की शिक्षा का सार्थक प्रयास	43
27.	छात्रों द्वारा ''बाल अखबार''	44
28.	खेल से शिक्षा की ओर : एक सफल प्रयोग	45
29.	साँप सीढ़ी के माध्यम शिक्षण का अनूठा प्रयास	46
30.	कविता/कबड्डी (कविता)	47
31.	सुर्खियों में बेसिक शिक्षा	48

सम्पादकीय

नव वर्ष और गणतंत्र दिवस की शुभकामनाओं के साथ प्रेरणा पत्रिका का जनवरी 2021 अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है। नयी आकांक्षाओं और नये विश्वास के साथ उम्मीदों के क्षितिज पर नयी उमंगे हिलोरे ले रही हैं कि शायद विगत वर्ष के कठिन करोना काल से मुक्ति मिलेगी। फिर से बेसिक शिक्षा विभाग के विद्यालयों में बच्चों की चहल–पहल से विद्यालय प्रांगण अंधेरे से उजियारे में परिवर्तित होंगे। लगभग एक वर्ष बाद एक उम्मीद भरी सुबह का इन्तजार है, जब विद्यालयों में छात्रों की आवाजें गूंजेंगी। अध्ययन–अध्यापन का सुरम्य वातावरण फिर से तैयार होगा।

कोरोना काल में बच्चों की शिक्षा पर कोई प्रभाव न पड़े इसके लिये हमारे शिक्षकों ने भरपूर प्रयत्न कर शैक्षणिक गतिविधियों को बनाये रखा है। इस अवधि में इलेक्ट्रानिक मीडिया और साइबर मीडिया की मदद से छात्रों को दूरदर्शन, रेडियो, यू–ट्यूब और फेसबुक के माध्यम से पाठ्य सामग्री तो भेजी ही गयी है साथ में उन्हें गृहकार्य देकर उसकी निगरानी भी की जाती रही है। इस निराशा काल को भी नयी तकनीक से शिक्षा देने की एक बड़ी उपलब्धि के रूप में याद किया जायेगा। विगत वर्ष महामारी के चलते छात्रों को भले ही विद्यालय नहीं बुलाया गया है, लेकिन हमारे शिक्षक बराबर विद्यालय में उपस्थित होकर तकनीक का सहारा लेते हुये शैक्षणिक गतिविधियों में संलग्न रहे हैं। छात्रों को समय–समय पर पाठ्य पुस्तकें, ड्रेस, जूते, मोजे, स्वेटर जैसी आवश्यक चीजें उनके घर पर पहुंचाने का सराहनीय कार्य भी किया गया है। विद्यालय में छात्रों की उपस्थिति न होने के बावजूद छात्रों को मध्यान्ह भोजन योजना के अन्तर्गत खाद्यान्न और परिवर्तन लागत उनके अभिभावकों को दी गयी है। नयी आशाओं के साथ हमें नयी मिसाल कायम करते हुये फिर से आगे बढ़ना है और बेसिक शिक्षा विभाग को सर्वोच्च शिखर पर ले जाना है।

आपरेशन कायाकल्प और मिशन प्रेरणा से विद्यालयों के भौतिक और शैक्षणिक परिवेश में आश्चर्यजनक परिवर्तन हुआ है। प्रदेश की प्राथमिक शिक्षा में हो रहे इन परिवर्तनों ने लोगों का ध्यान आकृष्ट किया है। लोग बड़ी उम्मीदों के साथ प्राथमिक विद्यालयों की ओर देखने लगे हैं शायद विद्यालयों की बदलती तस्वीर भविष्य के बदलते भारत की तस्वीर होगी।

पत्रिका के इस अंक में भी आपरेशन कायाकल्प, मिशन प्रेरणा, और विज्ञान शिक्षा से जुड़े आलेखों को शमिल किया गया है। हमारे बहुत से अध्यापक अच्छी कवितायें और कहानियाँ लिखते हैं, उनकी रचनाओं के साथ वे नवाचार भी शामिल किये गये हैं जो दूसरों के लिये मिसाल बनते हैं।

आशा है कि प्रेरणा पत्रिका का यह अंक बेसिक शिक्षा विभाग की उत्तरोत्तर प्रगति का साक्षी बनेगा।

(डॉ. सर्वेन्द्र विक्रम बहादुर सिंह)
शिक्षा निदेशक (बेसिक)

मा. बेसिक शिक्षा राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) डॉ. सतीश चन्द्र द्विवेदी द्वारा "ओपेन एजुकेशन रिसोर्स पोर्टल–विकल्प" का लोकार्पण

दिनांक 07 जनवरी, 2021

विगत 07 जनवरी, 2021 को माननीय बेसिक शिक्षा राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) डॉ. सतीश चन्द्र द्विवेदी द्वारा राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद के सभागार में एच.सी.एल. फाउन्डेशन–समुदाय और बेसिक शिक्षा विभाग उ.प्र. के सहयोग से विकसित "ओपेन एजुकेशन रिसोर्स पोर्टल–विकल्प" (VIKALP) का लोकार्पण किया गया। इस पोर्टल में कक्षा–1 से 8 तक के छात्रों के लिये उनके पाठ्यक्रम पर आधारित लगभग एक हजार वीडियो डाले गये हैं। इस पाठ्य सामग्री से शिक्षकों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने में सहायता प्राप्त होगी।

इस कार्यक्रम में बेसिक शिक्षा निदेशक डॉ. सर्वेन्द्र विक्रम बहादुर सिंह, श्री आलोक वर्मा, निदेशक एच.सी.एल. फाउण्डेशन (समुदाय) और सुश्री ललिता प्रदीप, निदेशक, राज्य शैक्षिक तकनीकी संस्थान, उ.प्र. उपस्थित रहीं।

पोर्टल का लोकार्पण करते हुये माननीय बेसिक शिक्षा राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) डॉ. सतीश चन्द्र द्विवेदी ने कहा कि यह पोर्टल–"विकल्प" बेसिक शिक्षा के परिदृश्य को उन्नत बनायेगा। इससे बच्चों के सीखने की क्षमता और स्थाई ज्ञान में वृद्धि होगी।

फोटो फीचर

फोटो फीचर

गणतंत्र दिवस के अवसर पर मा. बेसिक शिक्षा राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) डा. सतीश चन्द्र द्विवेदी का संदेश

आज हम सभी गणतंत्र दिवस का राष्ट्रीय पर्व हर्ष एवं उल्लास के साथ मना रहे है। यह दिवस प्रत्येक भारतीय के हृदय में देश के प्रति निष्ठा, कर्तव्य, आदर एवं स्वाभिमान का भाव जागृत करता है। हमें विश्व के विशालतम लोकतांत्रिक देश का नागरिक होने का भी गौरव प्राप्त है। इस दिन हमने अपना संविधान अंगीकृत किया और एक सम्प्रभु, पंथ निरपेक्ष व लोकतांत्रिक भारत की संकल्पना साकार हुई। यह पावन पर्व देश के वीर सपूतों के त्याग एवं बलिदान का स्मरण कराता है एवं हमें कर्तव्यनिष्ठा की प्रेरणा भी प्रदान करता है।

बेसिक शिक्षा में गुणवत्तापूर्ण सुधार लाना हमारी प्राथमिकता है और इस दिशा में हम सतत् प्रयत्नशील है। प्रदेश के यशस्वी माननीय मुख्यमंत्री जी के नेतृत्व में विगत लगभग चार वर्षों में बेसिक शिक्षा विभाग द्वारा कक्षा 1 से 8 तक की प्रारम्भिक शिक्षा के क्षेत्र में सुधार लाने हेतु महत्वपूर्ण कार्यक्रम संचालित किये गये हैं, जिसके सकारात्मक परिणाम प्राप्त हुए हैं।

हमारा संकल्प है कि कोई भी बच्चा शिक्षा से वंचित न रह जाये। इस हेतु अध्यापकों द्वारा आउट ऑफ स्कूल बच्चों को चिन्हित कर विद्यालयों में नामांकन एवं ट्रैकिंग वैश्विक महामारी की विषम परिस्थितियों में भी 'शारदा' पोर्टल के माध्यम से की गयी है। दिव्यांग बच्चों की शिक्षा को प्रोत्साहित करने के लिए व उनके चिकित्सीय व शैक्षिक पुनर्वास के लिए मोबाइल एप बेस्ड इन्टीग्रेटड प्रणाली ''समर्थ'' लागू की गयी है तथा पाठ्यक्रम विकसित किया गया है।

राज्य सरकार के वित्तीय संसाधनों से छात्र–छात्राओं को स्वेटर और जूता–मोजा देने का निर्णय लिया गया जिससे प्रतिवर्ष लगभग एक करोड़ साठ लाख बच्चे लाभान्वित हो रहे हैं। यद्यपि वर्तमान सत्र में कोरोना महामारी के दृष्टिगत विद्यालय बन्द चल रहे हैं फिर भी अध्यापकों एवं अभिभावकों के माध्यम से सभी बच्चों को उक्त सुविधाएं उपलब्ध करा दी गयी हैं। लगभग एक करोड़ अस्सी लाख छात्र–छात्राओं को निःशुल्क पाठ्यपुस्तकें एवं यूनिफार्म, स्कूल बैग तथा जूते–मोजे समय से उपलब्ध कराने हेतु क्रय प्रक्रिया को पारदर्शी एवं समयबद्ध बनाया गया है, ताकि बच्चों को गुणवत्तायुक्त सामग्री प्राप्त हो सके। इस कोरोना काल में भी बच्चों को उक्त सुविधायें उपलब्ध करायी जा रही हैं।

माननीय मुख्यमंत्री जी के निर्देशन में राज्य सरकार द्वारा 2018 से ''आपरेशन कायाकल्प'' का वृहद अभियान संचालित है। इस अभियान के अन्तर्गत प्रथम वरीयता के आधार पर समस्त 1.59 लाख परिषदीय विद्यालयों को 18 आधारभूत अवस्थापना सुविधाओं से संतृप्त करने के लिए अभियान गतिमान है जिसमें उल्लेखनीय प्रगति हुई है। महत्वाकांक्षी ''मिशन प्रेरणा'' के अन्तर्गत सुविचारित क्वालिटी फ्रेम वर्क लागू किया गया है। अध्यापकों के उपयोगार्थ तीन मॉड्यूल्स–आधारशिला, ध्यानाकर्षण एवं शिक्षण संग्रह विकसित किये गये जो अध्यापकों को उपलब्ध करा दिये गये हैं।

अध्यापकों की क्षमता संवर्द्धन पर विशेष बल दिया गया है। सेवारत शिक्षकों एवं स्कूल–प्रमुखों के सम्यक–प्रशिक्षण हेतु राष्ट्रीय कार्यक्रम 'निष्ठा' National Initiative for School Heads and Teacher's Holistic Advancement (NISHTHA) के रूप में क्रियान्वयन उत्तर प्रदेश में एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली एवं एस.सी.ई.आर.टी., उ.प्र. द्वारा कराया गया है। उक्त कार्यक्रम के अन्तर्गत सभी लगभग 5.75 लाख शिक्षकों, शिक्षामित्रों एवं अनुदेशकों की क्षमता वृद्धि हेतु प्रत्येक जनपद में विकास खण्ड स्तर पर पाँच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये गये हैं, जिसमें अतिरिक्त के.आर.पी. एवं एस. आर.पी. द्वारा ब्लॉक स्तरीय निष्ठा शिक्षक प्रशिक्षण के अन्तर्गत प्रदेश में लगभग चार लाख शिक्षक एवं प्रधानाध्यापक प्रशिक्षित किये गये हैं।

बेसिक शिक्षा के लिए समर्पित शिक्षकों की शिक्षण अवधि में वृद्धि हेतु टाइम एण्ड मोशन स्टडी प्रणाली लागू की जा रही है। इस प्रणाली से प्रतिवर्ष शिक्षण दिवसों में पर्याप्त वृद्धि होगी।

दीक्षा पोर्टल के माध्यम से शिक्षकों द्वारा अतिरिक्त डिजिटल शिक्षण प्रणाली सामग्री का उपयोग करते हुए शिक्षण को रूचिकर एवं प्रभावी बनाया जा रहा है। दीक्षा ऐप पर शिक्षकों और विद्यार्थियों के उपयोगार्थ 4000 से अधिक वीडियों एवं विजुअल शिक्षण सामग्री उपलब्ध करायी गयी है। इसी प्रकार सेवापूर्व प्रशिक्षण के अन्तर्गत डी.एल.एड. प्रथम एवं तृतीय सेमेस्टर के विभिन्न विषयों पर ऑनलाइन कोर्स का विकास किया जा चुका है तथा दीक्षा पोर्टल के माध्यम से लगभग 65000 शिक्षकों–प्रशिक्षुओं द्वारा ऑनलाइन कोर्स किया जा रहा है।

बेसिक शिक्षा विभाग द्वारा मुक्त शैक्षिक संसाधनों पर आधारित प्रदेश का अपना पोर्टल 'विकल्प' लाँच किया गया है। यह पोर्टल प्रदेश के शिक्षकों को एक ऐसा प्लेटफार्म उपलब्ध करायेगा, जहाँ शिक्षक स्वयं की बनायी हुई शिक्षण सामग्री अपलोड कर सकते है।

एस.सी.आर.टी. द्वारा 70 जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों एवं परिषद के नियंत्रणाधीन इकाइयों हेतु प्रवक्ताओं की नियुक्ति हेतु प्रेषित अधियाचन के क्रम में उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग द्वारा चयनित 1238 अभ्यर्थियों की नियुक्ति की जा चुकी है तथा उनका ऑनलाइन प्रशिक्षण कराया जा चुका है।

विद्यालयों एवं शिक्षकों को स्थलीय मार्गदर्शन देने एवं सहयोगात्मक पर्यवेक्षण प्रदान करने हेतु योग्य अध्यापकों में से लगभग 4400 एकेडमिक रिसोर्स परसन्स का चयन करते हुए प्रशिक्षण दिया गया है। इनके द्वारा प्रत्येक माह लगभग 1 लाख 50 हजार विद्यालयों का पर्यवेक्षण किया जायेगा। इसके अतिरिक्त लगभग 4500 शिक्षक संकुल चयनित किये गये हैं, जो शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार हेतु स्थानीय स्तर पर दायित्वों का निर्वहन करेंगे।

छात्र–छात्राओं के लर्निंग आउटकम्स में वृद्धि के आंकलन हेतु त्रैमासिक एसेसमेन्ट टेस्ट सभी विद्यालयों में कराये जाते है जिसमें परीक्षा की शुचिता एवं शुद्धता पर विशेष बल दिया जाता है। परीक्षा परिणामों की राज्य स्तर पर तथा जनपद स्तर पर डैशबोर्ड के माध्यम से समीक्षा की जाती है। परीक्षा परिणाम के आधार पर स्कूल रिपोर्ट कार्ड तथा स्टूडेन्ट रिपोर्ट कार्ड अपलोड किये जाते हैं, जो अभिभावकों से साझा किये जाते हैं।

छात्र–छात्राओं में पढ़ने की आदत विकसित करने हेतु सभी विद्यालयों में पुस्तकालय की स्थापना की गयी है तथा छात्र–छात्राओं के शारीरिक एवं मानसिक विकास हेतु स्पोर्ट्स सामग्री/उपकरण क्रय करने हेतु धनराशि विद्यालयों को उपलब्ध करायी गयी है।

'कोविड–19' महामारी के प्रकोप के कारण बच्चे घर में सुरक्षित रहते हुए अपना पठन–पाठन कार्य सफलतापूर्वक कर सकें इस हेतु व्हाट्स–एप ग्रुप चलाये जा रहे हैं जिनमें प्रतिदिन पठन–पाठन सामग्री अध्यापकों एवं छात्र–छात्राओं के लिए भेजी जा रही है। इसके अतिरिक्त मिशन प्रेरणा की 'ई–पाठशाला' के अन्तर्गत कक्षा 1 से 8 तक के सभी बच्चों हेतु दूरदर्शन तथा आकाशवाणी के माध्यम से शैक्षिक कार्यक्रम प्रसारित किये जा रहे हैं। एस.सी.ई.आर.टी. द्वारा भी ऑनलाइन माध्यम से 'लाइव' कक्षा एवं व्याख्यानों का प्रसारण किया जा रहा है।

कक्षा–कक्षों को समृद्ध बनाने हेतु प्रत्येक विद्यालय को प्रिन्टरिच मैटेरियल, लाइब्रेरी बुक्स आदि उपलब्ध कराते हुए विद्यालय के परिवेश को उत्कृष्ट बनाने की कार्यवाही गतिमान है। साथ ही एक ही परिसर में संचालित लगभग 25000 प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों का संविलियन किया गया है।

अलाभित समूह एवं दुर्बल वर्ग की ड्राप आउट एवं आउट ऑफ स्कूल बालिकाओं की आवासीय शिक्षा हेतु प्रदेश में संचालित समस्त 746 कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालयों में गैप एनालिसिस कराकर अवस्थापना सुविधाओं के गैप चिन्हित कराये गये और चिन्हित अवस्थापना कमियों को दूर करने हेतु समग्र शिक्षा के अन्तर्गत धनराशि विद्यालयों को उपलब्ध कराते हुये अवस्थापना सुविधाओं का संतृप्तीकरण कराया गया है। वर्तमान में इन विद्यालयों में कक्षा 6 से 8 तक की ही शिक्षा दी जाती है जिससे बालिकाओं को ड्राप आउट होने की सम्भावना बनी रहती है। अतः राज्य सरकार द्वारा 404 कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालयों का उच्चीकरण कराया जा रहा है, ताकि बालिकाओं को कक्षा 12 तक की शिक्षा की सुविधा उपलब्ध हो सके।

परिषदीय विद्यालयों में कक्षा 1 से 8 तक पढ़ने वाले सभी बच्चों का 'आधार नामांकन एवं सत्यापन' कराया जा रहा है। सभी छात्र–छात्राओं का 'आधार नामांकन' किये जाने हेतु प्रत्येक विकास खण्ड में 02 'आधार रजिस्ट्रेशन किट' की व्यवस्था की गयी है।

उत्कृष्ट कार्य करने वाले अध्यापकों को प्रोत्साहन प्रदान करने हेतु प्रदेश सरकार द्वारा राज्य अध्यापक पुरस्कारों की संख्या 17 से बढ़ाकर 75 एवं पुरस्कार धनराशि रू. 10,000/–से बढ़ाकर रू. 25,000/–की गयी है। राज्य अध्यापक पुरस्कार हेतु इस वर्ष 73 उत्कृष्ट शिक्षकों का चयन किया गया है।

'मानव सम्पदा पोर्टल' के माध्यम से शिक्षकों का सेवा–विवरण, समस्त प्रकार के अवकाश, विभिन्न देयों का भुगतान, सेवा–पुस्तिका, चरित्र पंजिका आदि सम्बन्धी कार्यों हेतु त्वरित एवं पारदर्शी ऑनलाइन व्यवस्था सुनिश्चित की जा रही है।

मैं गणतंत्र दिवस के इस पावन पर्व पर सभी शिक्षा अधिकारियों, शिक्षकों, अभिभावकों व छात्र–छात्राओं को हार्दिक बधाई देता हूँ एवं इस शुभ अवसर पर उनसे यह अपेक्षा करता हूँ कि शिक्षा की वर्तमान योजनाओं को सफल बनाने में दृढ़ संकल्प होकर अभीष्ट लक्ष्य प्राप्ति में सहयोगी बनें। मुझे पूर्ण विश्वास है कि प्रारम्भिक शिक्षा के चहुँमुखी सुधार में हम अवश्य ही सफल होंगे।

जय हिन्द! जय भारत!

◆

डॉ. सतीश चन्द्र द्विवेदी
राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
बेसिक शिक्षा, उत्तर प्रदेश

गणतंत्र दिवस समारोह का आयोजन

माननीय बेसिक शिक्षा राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) डॉ. सतीश चन्द्र द्विवेदी द्वारा जनपद सिद्धार्थनगर की पुलिस लाईन में आयोजित गणतंत्र दिवस के मुख्य समारोह में झण्डारोहण किया गया। इस अवसर पर पुलिस परेड को सलामी दी गयी और परेड का निरीक्षण किया गया। गणतंत्र दिवस समारोह में कपिलवस्तु विधान सभा क्षेत्र के विधायक श्री श्यामधनी राही, जिलाधिकारी श्री दीपक मीणा, जिला न्यायाधीश श्री प्रेमनाथ, पुलिस अधीक्षक श्री राम अभिलाष मिश्रा, अतिरिक्त जिला न्यायाधीश श्री मायाराम वर्मा और अन्य गणमान्य उपस्थित थे। इस अवसर पर माननीय मंत्री जी द्वारा कार्यक्रम में शामिल बालक–बालिकाओं को सम्मानित किया गया।

फोटो फीचर

पुरातन छात्र सम्मान समारोह–एक नई पहल
(बेसिक शिक्षा विभाग जौनपुर)

बेसिक शिक्षा विभाग जौनपुर द्वारा परिषदीय विद्यालय के प्रति समाज के दृष्टिकोण में परिवर्तन लाने के लिये ''पुरातन छात्र सम्मान समारोह'' की अनूठी पहल का आयोजन किया गया। विगत 2 दिसम्बर, 2020 को जौनपुर के जिलाधिकारी श्री दिनेश कुमार सिंह व मुख्य विकास अधिकारी श्री अनुपम शुक्ला के मार्गदर्शन में बेसिक शिक्षा अधिकारी श्री प्रवीण कुमार तिवारी द्वारा जिले के 1957 परिषदीय विद्यालयों में पुरातन छात्र सम्मान समारोह आयोजित कराया गया। कार्यक्रम में इन सभी विद्यालयों में अध्ययन कर चुके कुल 7779 पुरातन छात्रों को सम्मानित किया गया। सम्मानित समस्त पुरातन छात्र कभी इन्हीं परिषदीय विद्यालयों के छात्र रहे और वे आज शासन, प्रशासन और समाज सेवा के उच्च पदों पर कार्य कर रहे हैं अथवा अपनी प्रतिष्ठित सेवा के पश्चात सेवा निवृत्त हो गये हैं।

कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य परिषदीय विद्यालयों के प्रति जन सुमदाय की मानसिकता में सकारात्मक परिर्वन लाना है। विद्यालयों में अभिभावकों की उपस्थिति में आयोजित इस समारोह से अभिभावकों की सोच में भी परिवर्तन होगा कि

ये वही विद्यालय हैं जहाँ से एक से बढ़कर एक विद्यार्थी निकल कर समाज में अपनी प्रतिष्ठित भूमिका अदा कर रहे हैं। इस कार्यक्रम से अभिभावक अपने बच्चों को विद्यालयों में प्रवेश दिलाने के लिये प्रेरित होगें और परिषदीय विद्यालय की छवि सुधारने में मदद मिलेगी।

इस आयोजन से परिषदीय विद्यालय में आपरेशन कायाकल्प, मिशन प्रेरणा जैसे दूरगामी कार्यक्रम और अध्यापकों की लगन और निष्ठा से निरन्तर उच्च होती शिक्षण पद्धति को समाज के सामने लाने में मदद मिलेगी।

इस अनूठे कार्यक्रम का आयोजन कोविड–19 की गाइड लाइन का पालन करते हुए जनपद–जौनपुर के 1957 परिषदीय विद्यालयों में किया गया। पुरातन छात्रों ने अपने विद्यालयों के विकास में भी सहर्श योगदान कर भविष्य में और सहयोग प्रदान करने की इच्छा व्यक्त की है।

◆

सौजन्य से–
प्रवीण कुमार तिवारी
बेसिक शिक्षा अधिकारी, जौनपुर

परिषदीय विद्यालयों में गणतंत्र दिवस समारोह

प्रदेश के विभिन्न जनपदों में बेसिक शिक्षा विभाग के प्राथमिक और उच्च प्राथमिक विद्यालयों में भी गणतंत्र दिवस समारोह कोरोना गाइड लाइन का पालन करते हुये धूमधाम से मनाया गया।

फोटो फीचर

फर्रुखाबाद : बेसिक शिक्षा के नये आयाम

प्रदेश के यशस्वी माननीय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश को उत्तम प्रदेश एवं प्रेरक प्रदेश बनाने के लिए अनेकानेक कार्यक्रम एवं अभियान चलाए जा रहे हैं। इसी के अंतर्गत जिला अधिकारी श्री मानवेंद्र सिंह के निर्देशन में जनपद फर्रुखाबाद में व्यापक सुधार एवं विकास का प्रभाव धरातल पर सभी को दृष्टिगत होने लगा है। इसमें बेसिक शिक्षा विभाग के अंतर्गत 'इनोवेटिव फाइव स्टार स्कूल प्रोजेक्ट एवं ऑपरेशन कायाकल्प' के अंतर्गत 1581 में से 1092 से अधिक प्राथमिक विद्यालयों एवं सभी पांच कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालयों का कायाकल्प हो चुका है। इसमें बालक, बालिका, दिव्यांग और बाल सुलभ शौचालयों का निर्माण एवं जीर्णोद्धार, मल्टीपल हैंडवाशिंग स्टेशन, पेयजल सुविधा, टाइलीकरण, किचन गार्डन आदि का कार्य 1092 विद्यालयों में संतृप्त हो चुका है। इसी तरह जनपद फर्रुखाबाद ऑपरेशन कायाकल्प में प्रदेश में टॉप फाइव में शामिल हो चुका है। वहीं बच्चों की

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा हेतु चलाए जा रहे 'मिशन प्रेरणा' के अंतर्गत जनपद का प्रदेश में दूसरा स्थान एवं 'रीडएलांग एप और दीक्षा एप' में प्रथम स्थान है। इसके अतिरिक्त 'मिशन चहारदिवारी' अभियान के अंतर्गत विद्यालयों सहित समस्त सरकारी परिसंपत्तियों जैसे आंगनबाड़ी केंद्र, उपकेंद्र, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, पंचायत घर इत्यादि में मनरेगा कन्वर्जेंस से संतृप्तिकरण 70 प्रतिशत से अधिक हो चुका है। 'मिशन विद्यालय पथ' के तहत शत् प्रतिशत विद्यालयों में मनरेगा कन्वर्जेंस से 'बारहमासी पथ' का निर्माण सुनिश्चित किया जा रहा है। सभी 1581 विद्यालयों में शत प्रतिशत पुस्तकालयों का निर्माण किया जा चुका है, 146 विद्यालयों में स्मार्ट क्लास आरंभ हो चुकी है तथा 11 सितंबर, 2019 से 'स्वर, लय, ताल वंदना प्रोजेक्ट' के अंतर्गत सभी विद्यालयों में संगीतमयी प्रार्थना सभा का आयोजन किया जा रहा है। विशेष प्रशिक्षकों द्वारा अध्यापकों और छात्रों को प्रशिक्षण दिया जा रहा है। इसी क्रम में 1030 से अधिक चिल्ड्रेन पार्क का

विद्यालयों में एवं विभिन्न गांवों में निर्माण कराया गया है। चिलौली ग्राम पंचायत में जनपद का सबसे सुंदर एवं सबसे बड़ा 'सद्भावना पार्क' स्थापित किया गया है। 'एक ब्लॉक दो पार्क योजना के अंतर्गत विकासखंडों में बड़े पार्कों का निर्माण कराया जा रहा है। इनका प्रत्यक्ष लाभ बच्चों एवं ग्रामीण युवा शक्ति को होगा। 25 दिसंबर, 2020 को गीता जयंती पर सरकारी विद्यालयों तथा निजी विद्यालयों के बच्चों की 'लोक गायन, पेंटिंग एवं निबंध प्रतियोगिता' का आयोजन कर पुरस्कार समारोह का आयोजन किया गया।

उपयुक्त कार्य के लिए जनपद फर्रुखाबाद को 'स्कॉच ऑर्डर ऑफ मेरिट अवार्ड' 2020 विद्यालय कायाकल्प के अंतर्गत मिला है। जनपद के नोडल अधिकारी के द्वारा भी विद्यालय कायाकल्प एवं कस्तूरबा विद्यालय कायाकल्प पर भी प्रशस्ति पत्र दिया गया है।

◆

राजेन्द्र पैंसिया
आई.ए.एस.
मुख्य विकास अधिकारी
फर्रुखाबाद

आपरेशन कायाकल्प का नया आयाम : हमारा विद्यालय हमारा गौरव

(जनपद : लखीमपुर खीरी)

जनपद–लखीमपुर खीरी में आपरेशन कायाकल्प को गति प्रदान करने के लिये जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी, बुद्धप्रिय सिंह ने नये वर्ष में एक अनोखी मुहिम की शुरूआत की है। लखीमपुर खीरी में कुल 3863 प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालय हैं। इन विद्यालयों में आपरेशन कायाकल्प के तहत 14 बिन्दुओं पर कराये जा रहे कार्यों को गति प्रदान करने और अध्यापकों को प्रोत्साहित करने के लिये आपने सोशल मीडिया का सहारा लिया है। शिक्षकों का मनोबल बढ़ाने के लिये आपने फेसबुक पर बेसिक शिक्षा विभाग लखीमपुर का पेज बनाया है। इस पेज पर आपकी **टैगलाइन ''हमारे विद्यालय हमारा गौरव और हमारे शिक्षक हमारे हीरो''** शिक्षकों में नया जोश भर रही है। इस पेज पर प्रत्येक सप्ताह आपरेशन कायाकल्प और मिशन प्रेरणा के अन्तर्गत एक विद्यालय का चुनाव किया जाता है और उसे **''स्कूल ऑफ द वीक''** के नाम से अपलोड किया जाता है। जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी की इस मुहिम से शिक्षकों को कुछ अच्छा करने की प्रेरणा मिल रही है वही उनके मध्य अपने विद्यालय को बेहतर बनाने की प्रतिस्पर्धा भी बढ़ रही है। इस पेज से ग्यारह सौ से अधिक अभिभावक और शिक्षक जुड़ चुके हैं। पहली बार फेसबुक के इस पेज पर संविलियन विद्यालय, मियापुर कालोनी, विकास क्षेत्र–मोहम्मदी को **''स्कूल ऑफ द वीक''** चुना गया, जिसे लगभग 1.5 लाख लोगों ने देखा और विभाग के इस प्रयास की सराहना की। दूसरे सप्ताह प्राथमिक विद्यालय रतसिया ब्लॉक बेहजम को **''स्कूल आफ द वीक''** के लिये चयनित किया गया। जिसे काफी सराहना मिल रही है।

जनपद–लखीमपुर खीरी में आपरेशन कायाकल्प के अन्तर्गत किये जा रहे बेहतरीन कार्यों के साथ–साथ विद्यालयों में रीडिंग कार्नर, पुस्तकालय, खेल और स्मार्ट कक्षायें विकसित करने का कार्य तेजी से किया जा रहा है। लखीमपुर खीरी के प्राथमिक और उच्च प्राथमिक विद्यालय प्रतिस्पर्धा में निजी विद्यालयों से आगे निकल रहे हैं।

◆

आपरेशन कायाकल्प जनपद–लखीमपुर

Lakhimpur Kheri BSA leads Covid-19 fight, scripts turnaround in schools too

Deo Kant Pandey

शिक्षा, सुरक्षा सशक्तिकरण और स्वावलम्बन को मिली नई ऊँचाई

(कस्तूरबा गाँधी आवासीय बालिका विद्यालय, जनपद–गोरखपुर)

बाबा गोरखनाथ की धरती गोरखपुर में अनुसूचित जाति, जनजाति और गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन कर रहे परिवारों की बच्चियों को शिक्षा, सुरक्षा, सशक्तिकरण और स्वावलम्बन के लिये 20 कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालय संचालित है। इन विद्यालयों में जिले की लगभग 2000 बालिकाओं को आवासीय सुविधा देते हुए कक्षा–8 तक की शिक्षा प्रदान की जाती है। जिसे इण्टरमीडिएट स्तर तक किये जाने का निर्णय लिया गया है। कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालय में बच्चियों को शिक्षा के साथ–साथ निःशुल्क आवासीय, सुविधा, ड्रेस, जूता मोजा, किताब–कापियाँ तथा नाश्ते–खाने की सुविधा प्रदान की जाती है। विद्यालय में विशेष परिस्थितियों में जीवन–यापन करने वाली अभिवंचित वर्ग की बालिकाओं को योग्य अध्यापिकाओं द्वारा शिक्षा दी जाती है। शिक्षा के साथ ही उनकी सुरक्षा और सशक्तिकरण के प्रयास किये जाते हैं। पढ़ाई के साथ–साथ इन्हें वोकेशनल ट्रेनिंग भी दी जाती है ताकि शिक्षा पूरी करने के पश्चात ये बच्चियाँ उच्च शिक्षा प्राप्त कर स्वावलम्बी बनें और समाज के निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायें। कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालय में उपलब्ध सुविधायें इस प्रकार हैं–

1. निःशुल्क छात्रावास की सुविधा।
2. छात्राओं के लिए बेड, गद्दा, रजाई, कम्बल, चादर, मच्छरदानी आदि की व्यवस्था।
3. छात्राओं को प्रतिमाह सौ रूपये देय।
4. छात्राओं को यूनिफार्म, स्वैटर, टोपी, जूता, जुराब, खेल हेतु ट्रेकसूट, पीटीशूज, अन्डरगारमेंट, तौलिया, नाईटसूट आदि की व्यवस्था।
5. इसके अतिरिक्त दैनिक उपयोग में आने वाली सामग्री जैसे हेयरआयल, नहाने का साबुन, कपड़ा धोने का साबुन, सर्फ, ब्रस, दन्तमंजन, हैण्डवास, आदि की व्यवस्था प्रति माह की जाती है।
6. जनरेटर, इन्वर्टर, लाईट, पंखा शुद्ध पेय जल की व्यवस्था।
7. छात्राओं की सुरक्षा, संरक्षा के लिए एक पी.आर.डी. जवान एवं चौकीदार की नियुक्ति और सुरक्षित चहारदीवारी।
8. छात्राओं का प्रतिमाह डाक्टर के द्वारा स्वास्थ्य परीक्षण।
9. खेलकूद गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिये भी सुविधायें प्राप्त हैं।

◆

सौजन्य से–
भूपेन्द्र नारायण सिंह
बेसिक शिक्षा अधिकारी, गोरखपुर

कस्तूरबा गाँधी आवासीय बालिका विद्यालय, जनपद–गोरखपुर

फोटो फीचर

कस्तूरबा गाँधी आवासीय बालिका विद्यालय, जनपद–गोरखपुर

फोटो फीचर

परिषदीय विद्यालयों के पाठ्यक्रमों पर आधारित वीडियो/सीडी का निर्माण

(राज्य शैक्षिक तकनीकी संस्थान उत्तर प्रदेश)

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद के अधीनस्थ प्रदेश में 1986 से राज्य शैक्षिक तकनीकी संस्थान कार्यरत है, जिसका प्रमुख कार्य प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर के पाठ्यक्रम से सम्बन्धित शैक्षिक कार्यक्रमों के वीडियो/सीडी का निर्माण करना है। संस्थान का मुख्य उद्देश्य प्रत्येक जिले और क्षेत्र की शैक्षिक आवश्यकताओं का विश्लेषण कर अनौपचारिक शैक्षिक व्यवस्था की संरचना करना है। संस्थान द्वारा राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद के सहयोग से अध्यापकों के सेवाकालीन प्रशिक्षण भी आयोजित किये जाते हैं। संस्थान के पास प्रशासनिक अभियन्त्रिकी और प्रोडक्शन से जुड़े अनुभवी कार्यकारियों की

पर्याप्त संख्या है, जिनके माध्यम से संस्थान द्वारा अपने कार्यक्रमों को विस्तार दिया जाता है। संस्थान द्वारा मानव संसाधन विकास मंत्रालय के पोर्टल nroer.gov.in के लिये 256 शैक्षिक फिल्में बनाकर अपलोड की गयी हैं।

संस्थान का अपना SIET Lucknow Official U-Tube Channel है, जिस पर लगभग 400 शैक्षिक वीडियो कार्यक्रम अपलोड हैं। संस्थान द्वारा ऑनलाइन शिक्षा के लिये अब तक 104 वीडियो कार्यक्रम बनाये जा चुके हैं और नियमित रूप से यह कार्य संचालित है।

◆

सौजन्य से
विनोद कुमार सिंह
प्रशासनिक अधिकारी

आदर्श विद्यालय जहाँ विदेशों से भी लोग शिक्षा व्यवस्था देखने आते हैं

(राज्य शिक्षक पुरस्कार से सम्मानित शिक्षक)

श्री सुशील कुमार
प्रधानाध्यापक
प्राथमिक विद्यालय–गुलरहिया
विकास खण्ड–हरख
जनपद–बाराबंकी

पुरस्कार
राज्य शिक्षक पुरस्कार–2018
राष्ट्रीय आई.सी.टी. पुरस्कार–2016

श्री सुशील कुमार ने अपनी लगन और निष्ठा से अपने विद्यालय को राज्य स्तर का उत्कृष्ट विद्यालय बना दिया है। आपके विद्यालय में प्रदेश की बेसिक शिक्षा की स्थित और उत्कृष्ट नवाचारों को देखने के लिये देश के विभिन्न प्रान्तों के साथ–साथ विदेशों से भी लोग अध्ययन के लिये आते हैं। दक्षिण अफ्रीका और इंग्लैण्ड की टीमें विद्यालय का भ्रमण कर चुकी हैं। आपके विद्यालय में वह सभी भौतिक और तकनीकी सुविधायें उपलब्ध जिनकी एक आदर्श विद्यालय में आप कल्पना कर सकते हैं। विद्यालय का सुसज्जित हरियालीयुक्त परिसर, स्मार्ट कक्षायें जिनमें प्रोजेक्टर, कम्प्यूटर, सी.डी. प्लेयर, लेपटॉप जैसी सुविधायें उपलब्ध हैं। यह सभी सुविधायें केवल दिखावटी नहीं बल्कि इनका प्रयोग शिक्षण के लिये किया जाता है और बच्चे भी नई तकनीक के साथ एकाकार हो रहे हैं।

यह विद्यालय आज जिस मुकाम पर है उसके पीछे एक लम्बी दास्तान है। श्री सुशील कुमार की प्रथम नियुक्ति ही इस विद्यालय में कार्यवाहक प्रधानाध्यापक के रूप में हुयी थी। जिस समय आपकी तैनाती हुयी उस समय विद्यालय की स्थिति बहुत ही दयनीय थी। जर्जर भवन, नाम मात्र के छात्र और अभिभावकों के मध्य विद्यालय के प्रति कोई रूचि नहीं ऐसे में सुशील कुमार जी को विद्यालय को सामान्य स्तर पर लाना एक बड़ी चुनौती थी। सबसे पहले आपने विद्यालय की स्थिति में सुधार के लिये अभिभावकों, विद्यालय के अध्यापकों और ग्राम प्रधान के साथ मीटिंग की जिसमें विद्यालय को आदर्श बनाने के लिये एक रोड मैप तैयार किया गया। आपके समक्ष सबसे बड़ी समस्या विद्यालय में भौतिक संसाधनों के विकास के साथ–साथ शैक्षणिक स्तर में सुधार करना था। आपने सबसे पहले विभागीय धन का सदुपयोग करते हुये विद्यालय में अतिरिक्त कक्षों, चाहारदीवारी, रसोईघर का

निर्माण और विद्यालय की रँगाई–पुताई कराकर आकर्षक बनाया। कक्षों की दीवारों पर ही ज्ञानवर्धक टी.एल.एम. बनवाये गये। ग्राम पंचायत के सहयोग से परिसर में मिट्टी डलवाकर उस पर कंक्रीट टाइल, शौचालय, पानी की टंकी और नल से पानी की व्यवस्था की गयी। विद्यालय में क्यारियाँ और लान बनवाकर परिसर को आकर्षक बनाया गया। भौतिक सुविधाओं के विकास के पश्चात लोगों की उत्सुकता विद्यालय के प्रति बढ़ने लगी।

भौतिक सुविधाओं के विकास के साथ ही विद्यालय के

ग्राम पंचायत व जिला पंचायत स्तर पर प्रयास के फलस्वरूप शौचालय व पानी टंकी का निर्माण

शैक्षिक स्तर को सुधारने के लिये आपने सहयोगी अध्यापकों के साथ नई शुरूआत की। विद्यालय में बाल संसद का गठन किया गया। कक्षा में पाठ्यक्रम के अनुसार अध्यापन और बच्चों को सिखाने पर जोर दिया गया। विद्यालय में फर्नीचर और खेल सुविधाओं का विकास किया गया। विभाग द्वारा

बच्चों को उपलब्ध करायी गयी यूनीफार्म, स्वेटर, जूता–मोजा की साफ–सफाई के साथ विद्यालय आने के लिये प्रेरित किया गया। उन्हें जन सहयोग से टाई–बेल्ट, आई कार्ड दिये गये। छात्रों को शैक्षणिक गतिविधियों के साथ–साथ शिक्षणेत्तर

विद्यालय में इंग्लैंड टीम की विजिट

बाल मेला का आयोजन

गतिविधियों जैसे–खेल–कूद, सांस्कृतिक कार्यक्रमों, समर कैंप, शैक्षिक भ्रमण से जोड़ा गया। अभिभावकों के मध्य विद्यालय में हो रहे परिवर्तनों पर सकारात्मक प्रतिक्रिया दिखने लगी।

आपके अथक प्रयास से प्राप्त सामाजिक सहयोग से विद्यालय की स्थिति में आश्चर्यजनक सुधार हुआ और विद्यालय को राज्य स्तर पर उत्कृष्ट विद्यालय के रूप में पुरस्कृत किया गया। विद्यालय के छात्र जनपद स्तर पर आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रमों और खेल–कूद गतिविधियों में प्रतिभाग करते हैं। विद्यालय में सभी पर्व और त्योहार मनाना, स्वागत और विदाई समारोह जैसी गतिविधियाँ संचालित हो रही हैं।

आपकी उपलब्धियों के आधार पर आपको वर्ष 2018 में राज्य के उत्कृष्ट शिक्षक पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

◆

एक स्कूल जहाँ ''नो एडमिशन'' का बोर्ड लगाना पड़ता है

(राज्य शिक्षक पुरस्कार से सम्मानित शिक्षिका)

श्रीमती नीरज मथुरिया
प्रधानाध्यापिका
प्राथमिक विद्यालय–बाद
जनपद–मथुरा

पुरस्कार
राज्य शिक्षक पुरस्कार–2018

श्रीमती नीरज मथुरिया बेसिक शिक्षा विभाग की कर्तव्यनिष्ठ और लगनशील अध्यापिका हैं जिन्होंने अपने प्रयास से छोटे से विद्यालय में जन प्रतिनिधियों के सहयोग से फर्नीचर, आर.ओ. वाटर, इनवर्टर और सोलर सिस्टम तक की सुविधा उपलब्ध करा दी है। विद्यालय की बिल्डिंग छोटी है बरामदे आदि को मिलाकर 125 बच्चों से अधिक के लिये स्थान नहीं है फिर भी विद्यालय के शैक्षिक स्तर को देखते हुये उनके अभिभावक अपने बच्चों का प्रवेश कराने के लिये प्रयासरत रहते हैं। स्थान के अभाव में हर वर्ष No Admission का बोर्ड लगाना पड़ता है।

विद्यालय में भले ही स्थान सीमित है लेकिन विद्यालय में हो रही गतिविधियाँ अभूतपूर्व हैं। श्रीमती नीरज मथुरिया छात्रों को उन्नत और आधुनिक तकनीक पर आधारित शिक्षा देने के लिये नित नये–नये प्रयास करती रहती हैं। इस कड़ी में आपके द्वारा विकसित गूगल एन्सर की और मिस यू कार्ड से छात्रों को स्कूल आने और नई–नई जानकारी प्राप्त करने में मदद मिल रही है।

''मिस यू कार्ड'' वाले नवाचार ने विद्यालय के प्रति अभिभावकों को जिम्मेदारी और भागीदारी बढ़ाई है। इस कार्ड के प्रयोग से अनुपस्थित चल रहे छात्रों को पुनः स्कूल लाने, ड्राप आउट की संख्या में कमी और विद्यालय से बच्चों के भावात्मक लगाव में वृद्धि हुयी है। इस नवाचार में अनुपस्थित रहने वाले बच्चों को Mis You लिखा हुआ कोर्ड भेजा जाता है और इससे अभिभावकों को भी जोड़ा जाता है। बच्चों की उपस्थिति बढ़ाने में यह नवाचार बहुत कारगर साबित हुआ है।

अध्ययन–अध्यापन के साथ बच्चों के शैक्षिक उन्नयन के लिये आप नये–नये प्रयोग करती रहती हैं जैसे–शैक्षिक कलेण्डर का पालन, विद्यालय में पपेट शो, नुक्कड़ नाटकों के माध्यम से शिक्षा देना और बच्चों को कार्टून, वीडियो बनाकर शिक्षित करना। विद्यालय में प्रत्येक माह किसी विशिष्ट अतिथि को बुलाकर बच्चों को उससे मिलवाना तथा उससे सम्बन्धित जानकारी दिलवाना आपके कार्यक्रमों का हिस्सा है। प्रत्येक वर्ष सत्र के प्रारम्भ में नामाँकन मेला लगाना जिसमें अभिभावकों की बड़ी संख्या में उपस्थिति रहती है। बच्चों के साथ–साथ उनके माता–पिता को भी बच्चों की उपलब्धियों पर सम्मानित करना, पर्व व त्योहारों पर मेला लगाकर बच्चों को जानकारी देना और प्रत्येक शनिवार को छात्रों को शिक्षणेत्तर गतिविधियों से जोड़ने के लिये No Bag Day मनाना, बच्चों को एक्सपोजर भ्रमण पर ले जाना आपकी प्रमुख गतिविधियाँ है। आपकी इन्हीं गतिविधियों ने विद्यालय को आदर्श बनाया है।

कोरोना काल में आपने आई.सी.टी. गतिविधियों के माध्यम से बच्चों की शैक्षिक गतिविधियों को जारी रखकर महत्वपूर्ण कार्य किया है। बच्चों को रीड एलान्ग एप, यू–ट्यूब, वाट्स एप ग्रुप बनाकर शिक्षा देना उन्हें होमवर्क देना और उसे फिर चेक करना आसान नहीं था जिसे आपने जिम्मेदारी से पूरा किया है। विद्यालय में भौतिक और शैक्षिक नवाचारों को जोड़कर उत्कृष्ट शिक्षण के लिये आपको वर्ष 2018 में राज्य शिक्षक पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

निजी विद्यालयों को मात देता परिषदीय विद्यालय

(राज्य शिक्षक पुरस्कार से सम्मानित)

श्री हरिओम सिंह
प्रधानाध्यापक
प्राथमिक विद्यालय–पेरई
विकास खण्ड–नेवादा,
जनपद–कौशाम्बी

पुरस्कार
राज्य शिक्षक पुरस्कार–2018
राज्य आई.सी.टी. पुरस्कार
जिलाधिकारी द्वारा उत्कृष्ट शिक्षक पुरस्कार

श्री हरिओम सिंह की प्रधानाध्यापक के रूप में प्राथमिक विद्यालय पेरई में तैनाती उनके लिये एक बड़ी चुनौती थी। यह प्राथमिक विद्यालय जहाँ स्थित है वह स्थान घनी आबादी वाला व्यवसायिक केन्द्र है। वहाँ कई निजी विद्यालय पहले से स्थापित है। लोगों में भी निजी विद्यालय के प्रति रूझान अधिक था। प्राथमिक विद्यालय में लोग अपने बच्चों को पढ़ाना पसन्द नहीं करते थे। विद्यालय में नाम मात्र के छात्र ही आते थे। हरिओम सिंह के लिये विद्यालय की साख स्थापित करने के साथ–साथ छात्रों की संख्या बढ़ाना सबसे कठिन लक्ष्य था। आपने सबसे पहले विद्यालय में भौतिक संसाधनों के विकास की ओर ध्यान दिया। सामुदायिक सहभागिता से विद्यालय में बाउन्ड्रीवाल बनवायी। विद्यालय को साफ–सुथरा बनाकर उसकी रंगाई–पुताई कराकर आकर्षक बनाया गया। विद्यालय के प्राँगण को हरा–भरा बनाने के लिये पेड़–पौधे, फूलों की रोपाई करायी गयी। समुदाय को विद्यालय से जोड़ने के लिये उनके बीच में जाकर सामाजिक गतिविधियों में बराबर आपकी सहभागिता मिसाल बन गयी। विद्यालय में लोगों के सहयोग से प्रोजेक्टर और कम्प्यूटर लगाकर स्मार्ट क्लास की स्थापना की गयी। अब बारी थी शैक्षणिक स्तर को उत्कृष्ट बनाने का इसके लिये आपने अथक प्रयास किया। बच्चों को स्वरचित कविताओं के माध्यम से अक्षर ज्ञान, भाषा, गणित व सामान्य ज्ञान की जानकारी दी जाने लगी। इसका सीधा असर हुआ कि बच्चों की अनुपस्थिति घटने लगी। पढ़ाई का स्तर देखकर अभिभावक भी निजी विद्यालयों से अपने बच्चों को वापस लाकर स्कूल भेजने लगे। विद्यालय में अभिभावकों की भागीदारी बढ़ाने के लिये उनके साथ पर्व त्योहार मनाना शुरू किया गया। विद्यालय में आयोजित कार्यक्रमों में छात्रों के माता–पिता को बुलाया जाता और उन्हें बेहतरीन अभिभावक के रूप में सम्मानित भी किया जाता था। बच्चों के जन्मोत्सव मनाना, पठन–पाठन में उत्कृष्ट छात्रों को पुरस्कृत करना जैसे नवाचारों का प्रयोग भी आपने शुरू किया।

आपने विद्यालय में आधुनिक तकनीक से अध्यापन का सिलसिला शुरू किया। कोरोना काल में यू–ट्यूब, फेसबुक, ट्वीटर और इण्टरनेट के प्रयोग से छात्रों को शिक्षा से जोड़े रखा। आपके विद्यालय में छात्र खुद कम्प्यूटर पर कार्य करते हुये देखे जाते हैं। आपका कमजोर छात्रों के लिये चित्रकथा, कामिक्स और पाठ्य पुस्तकों के क्यू.आर. कोड के माध्यम से उपचारात्मक शिक्षा देने का कार्य अभिभावकों के मध्य सराहनीय रहा। बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिये खेल–कूद और नैतिक शिक्षा पर आपका विषेष ध्यान रहता है। आपके प्रयास से विद्यालय में छात्रों की संख्या दुगुनी हो गयी है। सामाजिक गतिविधियों जैसे पल्स पोलियो, टीकाकरण, मतदाता जागरूकता, स्वक्षता अभियान और बेटी

शिक्षकों ने बदल दी विद्यालय की तस्वीर

कान्वेंट स्कूल की तर्ज पर पढ़ रहे यहां के बच्चे, स्मार्ट क्लास में पढ़ते हैं इस प्राथमिक विद्यालय के बच्चे

बचाओ बेटी पढ़ाओं कार्यक्रम में आपकी भीगीदारी की सराहना करते हुये जिलाधिकारी द्वारा आपको पुरस्कृत किया गया।

आपके उत्कृष्ट प्रयासों से विद्यालय के छात्र जिला स्तरीय कार्यक्रम में बराबर भाग लेते हैं। विभिन्न प्रतियोगिताओं में भी वे प्रथम, द्वितीय आते हैं। निजी विद्यालयों के मध्य अपने विद्यालय को नई पहचान दिलाने के लिये आपको राज्य स्तर पर वर्ष 2018 में उत्कृष्ट शिक्षक के रूप में सम्मानित किया गया है।

रिमझिम फुहारें और अपना विद्यालय

रिमझिम–रिमझिम सी बूंदे विद्यालय के आंगन में आयी।
अपने लघु परिसर में कितनी मनमोहक हरियाली छायी।।

मेघों ने गरज–गरज कर मादक संगीत सुनाया।
हरे–भरे वातावरण ने हम सबको उन्मुक्त बनाया।।

सूखी सरिताओं ने फिर से सुंदर नवजीवन पाया।
लहरों–लहरों पर देखो कैसा सौंदर्य आया।।

वन उपवन पनप गए सब कितने नव अंकुर आयें।
वे पीले–पीले पल्लव फिर से हैं हरियाली लायें।।

वन में मयूर अब नाचे हँस–हँस आनंद मनायें।
उनकी छवि को देख रही है नव सी घनघोर घटायें।।

प्रति पल हम नाचे खेलें जगजीवन मधुर बनायें।
अपने छोटे से परिसर में विद्या का संसार बसायें।।

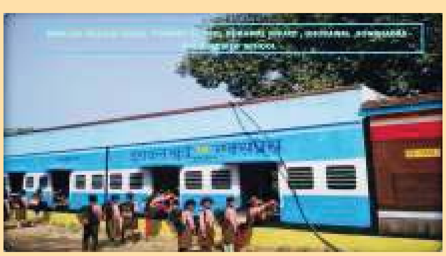

कमलेश कुमार गुप्ता (स.अ.)
इंग्लिश मीडियम माडल प्रा.वि.दुरावलखुर्द
विकासखण्ड–घोरावल, जनपद–सोनभद्र

कठिन परिश्रम और संघर्ष ने बदल दी विद्यालय की तस्वीर

(राज्य शिक्षक पुरस्कार से सम्मानित शिक्षिका)

सुश्री आसिया फारूकी
प्रधानाध्यापिका
प्राथमिक विद्यालय–अस्ती
जनपद–फतेहपुर

पुरस्कार
राज्य शिक्षक पुरस्कार–2018
बेस्ट टीचर पुरस्कार–2015
इनोवेटिव टीचर पुरस्कार–2016

आसिया फारूकी एक ऐसी सशक्त अध्यापिका हैं जिन्होंने समस्याओं के समक्ष हार न मानकर, डटकर उनका मुकाबला किया और सफलता प्राप्त की है। आज वे जिस

विद्यालय में कार्य कर रही है वह जिले का एक आदर्श विद्यालय है। वहाँ वे सभी सुविधायें हैं जो आदर्श विद्यालय में होनी चाहिए। आसिया फारूकी के विद्यालय के प्रति सर्मपण की कहानी वहां की दीवारें खुद बयां कर रही हैं। चारों ओर हरयाली रंग–बिरंगे फूल और सब्जियों से भरपूर किचन गार्डेन जो बच्चों के साथ–साथ अभिभावकों के भी आकर्षण का केन्द्र है।

आसिया फारूकी का कहना है कि जब 2016 में उन्होंने इस विद्यालय में पहला कदम रखा तो वहाँ की स्थिति देखकर बहुत निराशा हुयी। टूटी–फूटी बिल्डिंग, चारों तरफ गंदगी और विद्यालय में गिनती के कुछ बच्चे यही हाल था इस विद्यालय का। ग्रामीणों का भी विद्यालय से कोई सरोकार नहीं था। कुछ अराजक तत्व विद्यालय परिसर में आकर ताश खेलते व अन्य असामाजिक गतिविधियों में लिप्त देखे जाते थे। गाँव की महिलायें विद्यालय के हैण्ड पम्प पर कपड़े धोती और बच्चों को नहलाती थीं, मना करने पर जवाब देतीं कि यह तो सरकारी है। शरारती बच्चे दिन भर स्कूल में क्रिकेट खेलते थे। विद्यालय परिसर का माहौल विद्यालय की तरह तो बिल्कुल नहीं था।

कहते है कि अगर समस्यायें हैं तो उनका समाधान भी है। आपने समस्याओं के सामने सिर झुकाना नहीं सीखा बल्कि हिम्मत से उनसे लड़कर विजय प्राप्ति की। आपने सबसे पहले विद्यालय की साफ–सफाई कराकर विद्यालय भवन की रंगाई–पुताई करायी। विद्यालय प्रांगण में ग्रामीणों के सहयोग से हरे–भरे पेड़–पौधे लगाकर एक सुन्दर सा किचन गार्डेन बनाया जिसमें आज भी सभी सब्जियाँ आलू, बैंगन, धनिया,

मक्का और अन्य सब्जियों का उत्पादन हो रहा है। विद्यालय को हरा–भरा बनाने के लिये आपने अपने छात्रों के साथ ग्रीन आर्मी का गठन किया जो विद्यालय को हरा–भरा रखने के साथ पर्यावरण के प्रति लागों को जागरूक करने का सराहनीय कार्य कर रही है। विद्यालय में बढ़ते आकर्षण से ग्रामीणों में भी जागरूकता आयी। आपने ग्रामीणों से सम्पर्क कर उन्हें अपने बच्चों को विद्यालय भेजने के लिये प्रेरित किया। आज आपके विद्यालय में लगभग 300 बच्चे शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। अकेली शिक्षिका होने के बावजूद आपको विद्यालय की तस्वीर बदलने में जो सफलता प्राप्त हुयी उसकी प्रशंसा जिला और बेसिक शिक्षा विभाग के अधिकारियों ने भी की है।

शिक्षा के प्रति आपके लगाव और निष्ठा को सम्मान प्रदान करते हुये आपको वर्ष 2018 में राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मान प्रदान किया गया। इस पुरस्कार के साथ–साथ आपको अनेक अन्य पुरस्कार भी प्राप्त हुये हैं।

◆

श्यामपट्ट

एक कृष्ण मुरारी की गीता से,
जीवन मर्म का ज्ञान हुआ।
ये कृष्णपट्ट भी उतना पावन,
शिक्षा का उत्थान हुआ।
सुशोभित होकर हर घर में,
भगवद गीता निवास करे।
हर शिक्षालय में श्यामपट्ट भी,

जीवन में ज्ञान का प्रकाश करें।
खुद स्याह होकर भी इसने,
सबका भविष्य उजास किया।
बन चाक ने भी मीरा इसके संग,
अध्येता का चलन मधुमास किया।
हम शिक्षकों का ये पशुपति,
हर दिन हमने संधान किया।

हर विद्यार्थी की बाधा का,
हमने इससे ही निदान किया।
शिक्षा, शिक्षक और छात्र के मध्य
'अनुराग' है ये अनमोल कड़ी।
इसके पावन प्रसाद से ही,
मैंने ये आज रचना गढ़ी।

डॉ. अनुराग पाण्डेय
सहायक अध्यापक
संविलियन विद्यालय, औरोताहरपुर,
ककवन,, कानपुर नगर

◆

शिक्षा के साथ–साथ खेलों में भी उत्कृष्ट

(प्राथमिक विद्यालय टिकरी मनौटी, विकासखण्ड खजुहा, जनपद–फतेहपुर)

प्राथमिक विद्यालय टिकरी मनौटी एक साधारण सा विद्यालय जिसके प्रति न समाज का कोई लगाव, न बच्चों का, कारण था विद्यालय में न तो कोई आर्कषण, न ही शैक्षिक गुणवत्ता। वैसे तो विद्यालय में 106 छात्रों का नामाँकन था लेकिन रोज आने वाले छात्रों की संख्या 40–45 के आस–पास ही रहती थी। इस दयनीय स्थिति में मेरी नियुक्ति वर्ष 2015 में विद्यालय में प्रधानाध्यापिका के पद पर हुयी। पहली बार जब मैंने विद्यालय में प्रवेश किया तो झाड़–झंखाड़, गन्दगी से भरपूर, टूटे दरवाजे, खिड़की वाले परिसर ने मेरा स्वागत किया। मुझे समझ में आ गया कि छात्रों की कम उपस्थिति के पीछे विद्यालय की यह स्थिति और प्रभावी शिक्षण का अभाव है। मैंने यह निश्चय किया कि विद्यालय की सूरत बदलनी है चाहे जैसे हो।

सर्वप्रथम मैंने विद्यालय की प्रबन्ध समिति की बैठक बुलाई जिसमें अभिभावकों को भी शामिल किया गया। सबके साथ विद्यालय की स्थिति पर चर्चा की गयी और विद्यालय को आकर्षक बनाने के लिये एक कार्य योजना तैयार की गयी। जन सहयोग तथा विद्यालय को मिलने वाली कम्पोजिट ग्रान्ट से सबसे पहले विद्यालय का हैण्ड पम्प और शौचालय ठीक कराया गया। बाद में विद्यालय की रंगाई–पुताई और पेन्टिंग से विद्यालय का कायाकल्प कराया गया। बिल्डिंग ऐज लर्निंग एड (BALA) से विद्यालय की दीवारों पर आकर्षक चित्र, ज्ञानवर्धक पेन्टिंग और प्रिन्टरिच इनवायरमेन्ट तैयार कराया गया। विद्यालय की साफ–सफाई पर भी नियमित ध्यान दिया जाने लगा। इन परिवर्तनों से धीरे–धीरे छात्रों की उपस्थिति बढ़ने लगी। अब आवश्यकता थी शिक्षण गतिविधियों में सुधार की। इसके लिये सभी सहयोगी शिक्षकों को एक–एक कक्षा की जिम्मेदारी दी और कक्षा–4 व 5 को पढ़ाने की जिम्मेदारी मैंने स्वयं संभाली। स्कूल में पीरियड के अनुसार विषयों को पढ़ाया जाने लगा। अच्छी पढ़ाई देखकर अभिभावक भी अपने बच्चों को विद्यालय भेजने लगे।

विद्यालय में छात्रों के सहयोग और उन्हें भविष्य का आदर्श नागरिक बनाने के लिये मैने विद्यालय में बाल संसद

का गठन किया। छात्रों को समूहों में बाँटकर उन्हें पर्यावरण, प्रार्थना, खोया पाया, मध्यान्ह भोजन, शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता और संचार आदि विभागों की जिम्मेदारी दी गयी। बच्चों को कार्य संपादन का मार्गदर्शन मिलने लगा और वे बड़ी तन्मयता से अपने आवंटित कार्य को पढ़ाई के साथ–साथ सहर्ष करते रहते थे। बच्चों के सहयोग से विद्यालय में पेड़–पौधे और फूलों की क्यारियाँ तैयार कर उनकी रोपाई करायी गयी। जिससे विद्यालय परिसर हरा–भरा और आकर्षक लगने लगा। शिक्षा के साथ बच्चों को कहानी, कविता, योग, ध्यान, व्यायाम और खेल गतिविधियों के लिये प्रेरित किया जाने लगा। खेलों के प्रति छात्रों के रूझान और मार्गदर्शन का ही परिणाम था कि जनवरी, 2020 में प्रयागराज में आयोजित मण्डलीय खेल–कूद प्रतियोगिता में विद्यालय की कक्षा–4 की छात्रा राधिका ने 200 मीटर दौड़ में गोल्ड मेडल प्राप्त कर विद्यालय और जनपद का नाम रोशन किया।

इस वर्ष विद्यालय की नामाँकन संख्या में दो गुनी वृद्धि हुयी है। विद्यालय की गतिविधियों में भी भरपूर जन सहयोग प्राप्त हो रहा है। करोना काल में छात्रों और अभिभावकों के व्हाट्सऐप ग्रुप बनाकर शिक्षा की अलख जलाये रखी गयी है। पुराने छात्रों को भी अपने आस–पास के छात्रों को पढ़ाने के लिये प्रेरित किया गया जिसका लाभ मिल रहा है। अभिभावकों के माध्यम से छात्रों तक रीड एलान्ग एप तथा दूरदर्शन व रेडियों कार्यक्रम से जोड़ा गया है। मीना मंच में छात्राओं व अभिभावक महिलाओं को जोड़कर महिला सशक्तिकरण के साथ छात्रों की शैक्षिक प्रगति को सुनिश्चित किया जा रहा है।लगभग 200 छात्रों के साथ प्राथमिक विद्यालय टिकरी–मनौटी ने आस–पास के क्षेत्र में अपनी अलग पहचान बनायी है। आज यह विद्यालय विकास खण्ड के उत्कृष्ट विद्यालय में गिना जाता है।

◆

सौजन्य से–
सुमन पाण्डेय
प्रधानाध्यापिका

आपदा को अवसर में बदलता एक विद्यालय

(प्राथमिक विद्यालय रूरूखास, विकास खण्ड–हैरिंगटनगंज, जनपद–अयोध्या)

देश में पिछले लगभग एक वर्ष से व्याप्त महामारी से निपटना एक बड़ी चुनौती थी। इस अवधि में छात्रों को विद्यालय बुलाना खतरनाक हो सकता था। ऐसे में उनकी पढ़ाई कैसे हो सबसे बड़ी समस्या बन गयी। ऊँची कक्षा के छात्रों को सूचना तकनीक के प्रयोग से शिक्षा देना फिर भी आसान था। सबसे बड़ी कठिनाई प्राथमिक विद्यालयों के छात्रों को शिक्षित करने की थी। ऐसे कठिन समय में परिषदीय विद्यालय के कुछ अध्यापक योद्धा के रूप में सामने आये। इन्हीं योद्धाओं में एक हैं श्री मनीष देव, प्रधानाध्यापक, प्राथमिक विद्यालय रूरूखास, विकास खण्ड– हैरिंग्टनगंज जनपद अयोध्या, जिन्होंने करोना की आपदा को अवसर में बदलने का प्रशंसनीय कार्य किया। मनीष देव जी इस अवधि में मिशन प्रेरणा के लक्ष्यों को पूरा करने के लिये सहयोगी अध्यापकों के साथ जी जान से जुट गये। आपके विद्यालय में

इस समय लगभग 225 छात्र पंजीकृत हैं। इनकी शिक्षा के लिये निजी और सामुदायिक सहयोग से आपने विद्यालय में प्रोजेक्टर, लैपटाप की व्यवस्था करके स्मार्ट क्लास स्थापित की। इस स्मार्ट क्लास में बैठकर प्रत्येक कक्षा के लिये पाठ्यक्रम पर आधारित वीडियो तैयार कर विद्यालय के यू–ट्यूब चैनल पर पोस्ट किये जाने लगे। बच्चों से सम्पर्क कर उनके वाट्सऐप ग्रुप बनाये गये। यू–ट्यूब चैनल के साथ–साथ वीडियो ग्रुप पर भी डाले गये। जिन छात्रों के पास एन्ड्रायड फोन नहीं थे, उनके अभिभावकों को बुलाकर प्रति सप्ताह मिशन प्रेरणा के लक्ष्य के अनुरूप आकर्षक वर्कशीट दी जाती थी और बच्चों के कार्य करने के पश्चात् प्रत्येक शनिवार उसे जमा कराकर जांच की जाती और आगामी सप्ताह के लिये फिर नये निर्देश के साथ नयी वर्कशीट दी जाती थी। पाठ्यक्रम के साथ–साथ इस अवधि में बच्चों के सामान्य ज्ञान

में वृद्धि के लिये आपने 300 महत्वपूर्ण प्रश्नों पर आधारित ऑनलाइन ई–बुक तैयार की जिसका लाभ छात्रों को मिल रहा है।

श्री मनीष देव जी की इस विद्यालय में प्रधानाध्यापक के रूप में नियुक्ति मार्च, 2019 में हुयी थी। तभी से आप विद्यालय में भौतिक सुविधाओं और शैक्षणिक उन्नयन के लिये कार्य कर रहे हैं। आपकी शिक्षण विधा के प्रभाव से शैक्षिक गुणवत्ता में वृद्धि के साथ–साथ छात्रों की उपस्थित में भी आशातीत वृद्धि देखी गयी है। समय–समय पर विद्यालय प्रबन्ध समिति की बैठक आयोजित करना, विद्यालय में पुस्तकालय और लर्निंग कार्नर बनाना, छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिये योग, व्यायाम और ध्यान की कक्षा चलाना, अच्छे छात्रों को पुरस्कृत करना, नियमित रूप से खेलकूद के लिये प्रोत्साहन देना मनीष देव जी की प्रमुख गतिविधयाँ हैं।

कोरोना काल में जन सहयोग से प्रत्येक छात्र के लिये मास्क उपलब्ध कराना, विद्यालय में झूला, दीवार घड़ी, वाटर कूलर आदि की आपने व्यवस्था करायी है। कोरोना अवधि में एक और महत्वपूर्ण उपलब्धि आपके नाम है। आपने कोरोना काल में विद्यालयों के प्रधानाध्यापक/प्रभारी प्रधानाध्यापकों की दक्षता एवं कार्यकुशलता में वृद्धि के लिये 09 अगस्त, 2020 को एस.सी.ई.आर.टी. के संयुक्त निदेशक डा. अजय कुमार सिंह की गरिमामयी उपस्थिति में **''स्कूल डॉक्यूमेन्टेशन एण्ड फाइनेन्सियल स्किल''** विषय पर बेविनार का आयोजन किया। आप अन्य विषयों पर भी बराबर एस.सी.ई.आर.टी. के मार्गदर्शन में बेविनार आयोजित कर चुके हैं, जिनका लाभ 71 जिलों 94000 शिक्षकों ने उठाया है।

◆

सौजन्य से–

श्री मनीष देव

प्रधानाध्यापक

बच्चों को पसन्द आ रही है नई तकनीक

(पूर्व माध्यमिक विद्यालय गोयला, लखनऊ)

प्रदेश की राजधानी लखनऊ से मात्र 20 कि.मी. दूर विकास खण्ड–बख्शी का तालाब स्थित पूर्व माध्यमिक विद्यालय गोयला नयी तकनीक आधारित शिक्षा के लिये छात्रों की पहली पसन्द बना हुआ है। नई तकनीक से शिक्षा प्राप्त कर बच्चे हिन्दी ओलिम्पियाड में स्थान बनाने के साथ–साथ राष्ट्रीय आय एवं योग्यता आधारित छात्रवृत्ति परीक्षा, नवोदय विद्यालय परीक्षा में चयनित हो रहे हैं। विद्यालय में स्थापित कम्प्यूटर लैब, सभी कक्षों में प्रोजेक्टर आधारित स्मार्ट क्लास, विद्यालय का सुरम्य और हरा–भरा परिसर बच्चों का मनोबल बढ़ा रहा है। बच्चे उत्साहित होकर पूरे मनोयाग से अध्ययन कर रहे हैं। कोरोना काल में विद्यालय में स्थापित कम्प्यूटर लैब और स्मार्ट क्लास से बच्चों को अध्ययन में बड़ी सहायता मिली है।

विद्यालय में आधारभूत सुविधाओं के विकास और उच्च तकनीक आधारित वातावरण बनाने का श्रेय जाता है, विद्यालय के प्रभारी प्रधानाध्यापक श्री सुरेश जयसवाल जी को। विद्यालय के प्रति श्री सुरेश जायसवाल की लगन, निष्ठा और समर्पण का ही परिणाम है कि अब विद्यालय की सभी कक्षाओं और प्रांगण में क्लोज सर्किट कैमरे, प्रत्येक कक्षा में प्रोजेकटर युक्त स्मार्ट क्लास, स्थापित हैं। इस प्रकार की सुविधाओं के विकास में आपने स्वयं के साथ–साथ सामुदायिक सहयोग भी प्राप्त किया है।

विद्यालय के शैक्षिक वातावरण को उत्कृष्ट बनाने के लिये आप अवकाश के दिनों में बच्चों को बुलाकर अतिरिक्त कक्षायें चलाते हैं। बच्चों में पठ्न–पाठ्न और लेखन क्षमता विकसित करने के लिये समय–समय पर निबन्ध, सामान्य ज्ञान और गणित प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है। विद्यालय में छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिये नियमित रूप से खेलकूद और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन होता है। छात्रों को समय–समय पर शैक्षणिक एक्सपोजर भ्रमण पर भी ले जाया जाता है।

विद्यालय के वातावरण को हरा–भरा और सुरम्य बनाने के लिये स्वयं सेवी संस्थाओं और स्थानीय लोगों का सहयोग लिया गया है। विद्यालय प्रबन्ध समिति भी सक्रिय है। ओलंपियाड 2019 में भी विद्यालय को 03 स्वर्ण एक रजत व एक कांस्य पदक प्राप्त हुआ है। इसी ओलंपियाड में विद्यालय की दो छात्राओं को देश में 91वाँ व 92वाँ स्थान प्राप्त हुआ है। विद्यालय में नवाचारों का प्रयोग करते हुये शिक्षा प्रदान की जा रही है।

◆

सौजन्य से–
सुरेश जयसवाल
प्रधानाध्यापक

कोरोना काल में जन जागरूकता की अनोखी मिसाल

(रामलाल सिंह यादव की अनुकरणीय पहल)

पूरे देश और दुनिया में कोरोना वायरस की महामारी ने भयंकर तबाही मचाई है। वायरस की इस महामारी में वैश्विक मंदी के कारण करोड़ों लोग बेरोजगार हो चुके हैं। लोगों में असुरक्षा और तनाव है। वायरस के भय से नकारात्मकता का वातावरण पूरे देश व दुनिया में फैला हुआ है। भारत जैसे देश में जहाँ बहुत अधिक स्वास्थ्य सुविधाएं नहीं हैं, हर व्यक्ति हॉस्पिटल व डॉक्टर के पास नहीं जा सकता और सभी का कोरोना टेस्ट होना भी सम्भव नहीं है। वहाँ पर बेसिक शिक्षा परिवार भदोही के शिक्षक श्री रामलाल सिंह यादव जी ने 25 मार्च, 2020 से अब तक लगातार 400 से अधिक आरोग्य सेतु ऐप और कोरोना से बचाव के निर्देशों को अपने व्यक्तिगत खर्च से वाल पेंटिंग कर एक बहुत बड़े समुदाय को जागरूक किया है। श्री रामलाल सिंह यादव लॉक डाउन में जब पेंट ब्रश लेकर गाँव–गाँव जाकर कोरोना जागरूकता और आरोग्य सेतु ऐप की पेंटिंग शुरू की तो पुलिस विभाग से भी प्रताड़ना मिली लेकिन आपने हार नहीं मानी। जैसे–जैसे समय बीतता जा रहा था वैसे–वैसे कार्यों का विस्तार जन–जन तक हो रहा था। आपके इस प्रकार के कार्यों पर जब जिलाधिकारी भदोही श्री राजेन्द्र प्रसाद जी और पुलिस अधीक्षक श्री रामबदन सिंह की नजर पड़ी तो उन्होंने रामलाल जी को कार्यालय में बुलाकर सम्मानित किया। रामलाल जी द्वारा शाम को पेंटिंग का कार्य किया जाता था और सुबह दो घण्टे अपनी स्वेच्छा से क्वारेन्टाइन सेंटर अथवा गाँव–गाँव तहसीलदार के साथ जाकर भोजन वितरण का कार्य किया जाता था। कोरोना काल में आपके द्वारा निष्ठा और लगन से किये गये कार्य को देखते हुए अंजलि फाउण्डेशन इंदौर द्वारा आपको रू0 25000/– का नकद पुरस्कार दिया गया। प्राप्त पुरस्कार राशि अपने पास न रखकर के आपने उससे एक जरूरतमंद प्रतियोगी छात्र की मदद की। आपके अन्य कार्यों में एक शिक्षक होने के नाते बच्चों को ऑनलाइन शिक्षण कार्य कराना भी सबसे सर्वोपर था। आपने छात्रों को अपनी नवाचारी पुस्तक, सामान्य ज्ञान, हमारा परिवेश और हिन्दी राइटिंग लेखन पुस्तक और कॉपी, पेन्सिल मुफ्त में उपलब्ध करायी। कोरोना काल में बेहतरीन शिक्षण कार्य के लिए आपको बेसिक शिक्षा अधिकारी द्वारा प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। आप द्वारा राष्ट्रहित में किये गये कार्यों को राष्ट्रीय समाचार पत्रों ने प्रमुखता से स्थान दिया है।

◆

सौजन्य से–
रामलाल सिंह यादव
प्रधानाध्यापक कम्पोजिट विद्यालय
बड़वापुर, ज्ञानपुर, भदोही

वॉल पेंटिंग के जरिए नशामुक्ति-स्वच्छता की अलख

...और ब्रीडम ने समझ लिया पेंटर

ग्राम प्रधान ने बदल दी विद्यालय की सूरत

(प्राथमिक विद्यालय गायघाट जनपद–सोनभद्र)

ग्राम गोठानी के धर्मेन्द्र सिंह जैसे युवा ग्राम प्रधान अपने गांवों के विद्यालयों का कायाकल्प कर महत्वाकांक्षी जनपद–सोनभद्र में सामाजिक उत्थान को एक नई ऊंचाई और पहचान देने का प्रयास कर रहे हैं। उनके इस प्रयास को नीति आयोग द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर सराहा गया है। आलोक कुमार, स्वास्थ्य और शिक्षा सलाहकार, नीति आयोग और मनमोहन सिंह निदेशक पिरामल स्कूल ऑफ लीडरशिप ने अपने लेख में सोनभद्र दौरे की यादों को ताजा करते हुये प्राथमिक विद्यालय गायघाट पर प्रधान धर्मेन्द्र सिंह की प्रशंसा की है, जो वास्तव में उन सभी ग्राम प्रधानों को समर्पित है, जिन्होंने विद्यालय के महत्व को समझा और जाना है। विद्यालयों के माध्यम से सामाजिक आर्थिक और सांस्कृतिक विकास को यथार्थ रूप दिया जा सकता है।

ग्राम प्रधान धर्मेन्द्र सिंह पेशे से अधिवक्ता हैं, इन्होंने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा प्राथमिक विद्यालय गायघाट से की है ऐसे में इस विद्यालय से उनका विशेष लगाव भी रहा है। इन्होंने जनपद में 2018 में प्रारम्भ हुये मिशन सोन स्कूल कायाकल्प में न केवल अपने क्षेत्र के चार परिषदीय विद्यालयों का कायाकल्प कराया बल्कि अन्य साथी ग्राम प्रधानों को भी इस कार्य के महत्व को बताते हुये प्रेरित किया, जिसका व्यापक परिणाम आज पूरे सोनभद्र में दिख रहा है। स्कूल कायाकल्प के माध्यम से आपने गाँव के बच्चों को पढ़ने के लिये एक सुंदर प्रांगण जहां पेयजल, शौचालय और बिजली की सुविधा उपलब्ध कराना सुनिश्चित किया है। धर्मेन्द्र सिंह ने इस विद्यालय के कायाकल्प में अपने मानदेय को भी सहर्ष दान देकर एक मिसाल कायम की है।

धर्मेन्द्र सिंह ने जनपद में मौजूद यूनिसेफ टीम के साथ मिलकर विद्यालय में पेयजल और शौचालय की व्यवस्था के साथ ही साथ बाला पेंटिंग को भी व्यक्तिगत रूचि के साथ विकसित करवाया है। धर्मेन्द्र सिंह कहते हैं, कभी नक्सल क्षेत्र में चिन्हित गांव केवल शिक्षा के बल पर ही आगे बढ़ रहा है। मैं चाहता हूं कि मेरे विद्यालय गायघाट में पढ़ने वाले प्रत्येक छात्र को कभी ऐसा न लगे कि वह किसी प्राइवेट विद्यालय की सुख–सुविधाओं से वंचित है। वह यहां उत्कृष्ट शिक्षा लेकर राष्ट्र निर्माण का कार्य करें, इसके लिये मैं सदैव समर्पित रहूंगा चाहे मैं प्रधान रहूं या ना रहूं।'' आपरेशन स्कूल कायाकल्प मुहिम से अभिभावकों का परिषदीय विद्यालयों से लगाव भी बढ़ा है। शिक्षकों से सामंजस्य और संवाद स्थापित हुआ है। धर्मेन्द्र सिंह के कारण अन्य ग्राम प्रधानों में भी विद्यालयों के प्रति रूचि बढ़ी है जिसके परिणामस्वरूप जनपद–सोनभद्र में विकास की एक नई इबारत लिखी जा रही है।

◆

सौजन्य से–
अली इमरान
परामर्शदाता, गुणवत्ता प्रकोष्ठ
समग्र शिक्षा अभियान

Improving Science Teaching Skills of Prospective Teachers' Using 5E Model

Introduction

Education is the essence of any civilization. The purpose of education is not only making a student literate but also to add to his/her rational thinking, self-sufficiency and knowledge. The education commission (1964-66) professed "the destiny of India is now being shaped in her classroom". So did the National Policy of Education NPE (1986) emphasize; "The status of teacher reflects the socio cultural ethos of society, it is said that no people can rise above the level of teachers". Such exhortation are indeed and expression of the important role played by the teachers as transmitters; inspires; and promoters of man's eternal quest for knowledge. In this regard teacher education becomes an essential part of education system Mondalet.al. (2015).

The quality of teacher has a profound role in enhancing the standards of educational processes. So; National Curriculum Frame work For Teacher Education NCFTE-(2009) recommends revitalizing primary pre-service teacher -education program by applying quality standards in all respects. It also recommends "Pre -Service Teacher Education (PSTE) should empower students to present themselves creatively and sensitively to a range of issues that will arise in classrooms and enable success of diverse student population including first generation school goers". For this the prospective teachers should have adequate academic as well as professional qualities. It is observed that majority of elementary prospective teachers don't have proper understanding of science content and adequate science teaching skills. For this reason they have faced difficulty in class room science learning and teaching. Method of instruction is an important aspect of teaching-learning process. It is the teacher who is required to select a suitable method for effective communication with students in class-room. Teacher faces many difficulties at the time of science-teaching in classroom, which consequently effect learning and achievement of future generation. This is prime concern to motivate prospective teachers to improve science teaching skills for meaningful learning. This is only possible through acquisition of desirable science teaching skills. In pre-service teacher education acquisition of teaching skills is inculcated through micro-teaching.

This is further strengthening by 5E Model based on Constructivist approach of teaching. It is basically a theory based on observation and scientific study about how people learn. It says that people construct their own understanding and knowledge of the world, through experiencing things and reflecting on those experiences. Constructivism is not a method but it is a theory of knowledge and learning that should inform practice but not prescribe practice. By its very nature, constructivism emphasizes the importance of the teaching context, student prior knowledge, and active interaction between the learner and the content to be learned. Constructivism is an emerging pedagogy among teaching community across the world and National curriculum Frame work NCF (2005) confirmed the direction to it in Indian classroom situation. Present study outlines an experimental study on prospective teachers' learning in Constructivist environment and its subsequent effect on achievement; acquisition of science-teaching skills and attitude towards science at D.El.Ed. The study tries to prove the difference in achievement; acquisition of science-teaching skills and attitude of two groups of D.El.Ed. Students who were exposed to conventional and 5E Model; a constructivist based pedagogy respectively in two section of D.El.Ed. of first semester; batch 2018 of District Institute of Education and Training (DIET) Gyanpur district Bhadohi in state of U.P.

Objectives-

1. To study the effect of 5E model based science teaching on prospective teachers' achievement.
2. To compare the effect of 5E model and conventional method mean score of prospective teachers' achievement in science.
3. To study the effect of 5E model on prospective teachers' science teaching skills.

4. To compare the effect of 5E model and conventional method mean score of prospective teachers' science teaching skills.
5. To study the effect of 5E model based teaching on prospective teachers' attitude towards science teaching.
6. To compare the effect of 5E model and conventional method mean score of prospective teachers' attitude towards science teaching.

Hypotheses for the Study

The present study was guided by the following six hypotheses:

H01. There is no significant difference between the pre test and post test achievement score of prospective teachers' in science when taught through 5E model.

H02. There is no significant difference between mean gains score of prospective teachers' achievement in science when taught through 5E model and that of conventional one.

H03. There is no significant difference between the pre test and post test science teaching skills scores of prospective teachers' when taught through 5E model.

H04. There is no significant difference between mean gains score in science teaching skills of prospective teachers' when taught through 5E model and that of conventional one.

H05. There is no significant difference between the pre test and post test attitude score of prospective teachers' towards science teaching when taught through 5E model.

H06. There is no significant difference between mean gains score of attitude of prospective teachers' towards science teaching when taught through 5E model and that of conventional one.

Design of the study

This study was a pre-test post-test quasi experimental design incorporating both qualitative and quantitative techniques. 5E' learning Engage-Explore Explain- Elaborate-Evaluate, (Bayee 1997) strategy has been applied to experimental group and conventional method of teaching to control group where total 100 prospective teachers dispersed in two groups participated. Science Achievement Test (SAT); Constructivist science teaching skills and Attitude towards Science was used to estimate the prospective teachers' science achievement; Constructivist science teaching skills and attitude towards science of both the groups i.e. controlled and experimental group was administered. The hypothesis was tested at 0.05 level using t-tests and find out significant gain in Mean scores of prospective teachers' in Science Achievement; Constructivist science teaching skills and Attitude towards science of experimental group.

The experimental data revealed three important results. Firstly, adopting constructivist learning approach significantly improves students' achievement in science as compared to using a conventional teaching method. Secondly; desirable acquisition of constructivist based science teaching skills not only motivate but also made them more confident in class for science learning and teaching. Thirdly; most of the prospective teachers' were improved their abilities of understanding and reflection by improving favorable attitude towards science these findings are consonance with the findings of Fish (1999). Jiuhua et.al.(2017) reported that 5E model hand significant positive impact on the improvement and further development and designing of teaching processes among novice teachers.

Findings of the study

The following conclusions can be drawn from the results:

1. The instruction based on 5E model caused a significantly better acquisition of scientific concepts than that of conventionally designed instruction.
2. Statistically significant mean difference was found between the experimental and control group in terms of attitude.
3. Science process skill was a strong predictor for the achievement of science concepts.
4. Existing knowledge of the students gives a strong idea of students' achievement in science. In order for meaningful learning to occur, students should link between new and existing knowledge. So, this should be taken into account for an effective

teaching. Students should be given the opportunity to discuss the concepts, test predictions, and refine hypotheses.

5 The 5E Model as a constructivist approach is an effective way in terms of help students enjoy science, understand content, and apply scientific Processes and concepts to authentic situations. Students should be provided with disequilibrium with their existing concepts, so that, they will have to rethink and try to reconstruct their knowledge. Teacher should facilitate safe, guided or open inquiry experiences and questioning so students might uncover their misconceptions about the concept.

Teachers must be informed about the usage and importance of 5E Model and they must plan the instructional activities accordingly. Curriculum programs should be based on the constructivist perspective. Students' attitudes towards science as a school subject should be considered while teaching science.

Limitations

Limitations of the study are listed below:

1. This study was limited the selected unit of science teaching.
2. This study was limited to D.El.Ed First semester 2018.
3. This study was limited to 100 students in two sections.

Recommendations

Sridevi (2013) highlights there are urgent need to bring out change in pre-service teacher education programs. The change in the perception of learners, learning process, evaluation etc. among teacher trainees has to be encouraged. Thus training programs on constructivist approach could be organized for pre-service and in-service teachers so as to develop an understanding and the necessary skills for the successful implementation of the model in the classroom situations.

Based on the results, the researcher recommends that: Similar research studies should be carried out for different institutions to strengthen and empower prospective teacher for science teaching and learning. Further research studies can be conducted to investigate the effectiveness of 5E Learning Cycle approach in understanding science concepts in different schools. This study can be carried out with greater groups to obtain more accurate results.

Need based training programs can be prepared for Pre- Service and In-service teacher based on findings of National Achievement Survey (NAS 2017).

Thus, innovative practices not only arouse curiosity but also provide opportunity to live and learn together by pairing and sharing of experiences which empower us for effective communication, collaboration and critical thinking in real situation to resolve problems.

Bibliography

- Bayee, R. (1997). Instructional model for Science Education in Developing
- Fish,L (1999) Why use the 5E Model for Teaching Science? Tape Stries Times1(2-3)
- Jiuhua H,, Chong Gao, Yang Liu Study of the 5E Instructional Model to Improve the Instructional Design Process of Novice Teachers Universal Journal of Educational Research 5(7): 1257-1267, 2017 http://www.hrpub.org DOI: 10.13189/ujer.2017.050718
- Ministry of Education (1966): Education and National Development: Report of the Commission (1964-66). New Delhi, Government of India.
- Mondal;A.Shaha;A.Baidya;MN.(2015)National Curriculum Framework for Teacher Education; 2009 International Journal of Applied Research(IJR) 1(9):776-778.Retrived from www.allresearchjournal.com
- National Curriculum Frame Work for School Education(2005). NCERT, New Delhi.
- NCFTE(2009) , National Curriculum Framework for Teacher Education. New Delhi12
- Sridevi K V, Effects of Constructivist Approach on Students' Perception of Nature of Science at Secondary Level, Artha J Soc Sci, 2013(12),49-66,

❖

Rajesh Kumar Pandey
Teacher-Educator
DIET Gyanpur Bhadohi
rajeshpandey1122@gmail.com

आधुनिक समाज में लैंगिक असमानता एक अभिशाप

भारतीय समाज में पुरूष को परिवार में सर्वोपरि माना जाता है। वंश पिता से पुत्र की दिशा में चलता है। मोक्ष प्राप्ति के लिए पुत्र का जन्म पुत्री की तुलना में महत्वपूर्ण माना जाता है एवं कुछ परिवारों में पुत्री के जन्म पर शोक तक मनाया जाता है। लैंगिकता की जड़े आज इस कदर बढ़ चुकी हैं कि अब व्यक्ति गर्भ में पल रही कन्या भ्रूण की हत्या से लेकर अग्नि में महिलाओं को जलाने में तनिक भी संकोच नहीं कर रहा है। विडम्बना तो इस बात की है कि एक माँ स्वयं स्त्री होकर के भी पुत्र को जन्म देने में ज्यादा खुशी महसूस करती है, वो बात अलग है कि उसकी इस अनुभूति में सामाजिक एवं पारिवारिक दबाव उत्तरदायी है। जब तक स्वयं महिलायें इस बात को स्वीकार नहीं करेंगी कि बालक–बालिका समान है। दोनों का समाज में बराबर का महत्व है तथा दोनों के जन्म से समान अनुभूति होती है तब तक लैंगिक असमानता को दूर नहीं किया जा सकता है। इसलिए सर्वप्रथम महिलाओं को सशक्त होने की जरूरत है। समाज में लोगों की मानसिकता, सामाजिक संरचनाएं व व्यवस्थायें बालक–बालिका के मध्य विभेद उत्पन्न कर देती हैं जिसके कारण बालिकायें अपने अधिकारों को समान रूप से पाने में वंचित रह जाती हैं और लैंगिक असमानता जैसी समस्या उत्पन्न हो जाती है। परिवार के सभी निर्णय करने के अधिकार पुरूष के पास होते हैं। स्त्री की स्थिति पुरूष से हीन मानी जाती है। पितृसत्तात्मक सोच और परम्परागत सामाजिक व्यवस्था के कारण ही बाल–विवाह, दहेज–प्रथा, विधवा पुर्नविवाह पर रोक,

महिलाओं के विरूद्ध हिंसा, पुत्र–वधु के साथ दुर्व्यवहार, बालिकाओं में अशिक्षा, लैंगिक असमानता आदि सामाजिक समस्याओं का उद्भव हुआ है। देश में महिलाओं के प्रति लोगों की मानसिकता उनके साथ किया जाने वाला बर्ताव देश में निरंतर घट रहा लिंगानुपात व शैक्षिक अनुपात यह स्पष्ट करता है कि लैंगिक विषमताएं हमारे देश में कितना स्थायी रूप ले चुकी हैं।

सृष्टि सृजन में महिला–पुरूष दोनों का समान योगदान होता है। दोनों एक–दूसरे के पूरक हैं। दोनों ही ईश्वर की सुन्दर कृतियाँ हैं, जो इस दुनिया को मिलाकर सुन्दरतम स्वरूप प्रदान करते हैं। भूतपूर्व प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू ने कहा था कि ''भारत की महिलाओं पर मुझे गर्व है। मुझे उनके सौन्दर्य, आभा, आकर्षण, लज्जा, शालीनता, बुद्धिमत्ता और त्याग की भावना पर नाज है। मैं सोचता हूँ कि यदि भारत की भावना का सही मायने में कोई प्रतिनिधित्व कर सकता है, तो वे भारत की महिलाएं ही हो सकती हैं।'' गाँधी जी ने महिलाओं की शिक्षा पर जोरे देते हुए कहा था कि – अगर पुरूष शिक्षित होते हैं तो वह केवल व्यक्तिगत जीवन के लिए शिक्षित होता है, लेकिन यदि महिला शिक्षित होती है तो पूरा परिवार शिक्षित माना जाता है।'' फिर भी लड़कियों के साथ जन्म के बाद से ही भेदभाव किया जाने लगता है उसे विद्यालय से वंचित कर घरेलू कार्य में लगा दिया जाता है।

धीरे–धीरे बालक– बालिकाओं में भेदभाव इतना सुदृढ़ हो जाता है कि व्यवस्था की आड़ में विभेदीकरण का दौर शुरू हो जाता है जिसकी जड़े धीरे–धीरे मजबूत होती चली जाती हैं और लिंग भेद शुरू हो जाता है। स्त्री के व्यक्तित्व और बौद्धिक विकास में पुरूष (पिता, पति, पुत्र) अक्सर खलनायक की भूमिका में ही क्यों दिखाई देते हैं? स्त्री परिवार या विवाह संस्था से बाहर स्वतंत्र रूप से सम्मानजनक जीवन क्यों नहीं जी सकती? विवाह के अलावा क्या और कोई विकल्प हो ही नहीं सकता? क्या औरत को हमेशा रक्त या यौन सम्बन्धों और संपत्ति के समीकरणों में ही जाना–पहचाना जाएगा? उनकी न अपनी कोई स्वतंत्र पहचान होगी और न कोई स्वतंत्र निर्णय। मौजूदा परिवार और समाज के सड़ते ढांचे को और अधिक लम्बे समय तक बचा पाना सर्वथा असंभव ही नहीं, बेहद खतरनाक भी है। अनेक परिवारों में लड़कियों को बोझ समझा जाता है और उनके खान–पान तथा शिक्षा पर र्प्याप्त ध्यान नहीं दिया जाता है। जहाँ एक ओर परिवार में माता–पिता अपने पुत्र को आँखों का तारा समझकर उसे उच्च शिक्षा दिलाने में प्रयासरत रहते है वहीं दूसरी ओर लड़कियों के जन्म को अभिशाप मानकर उसे प्रारंभिक शिक्षा देने में भी सौ बार सोचते हैं। लड़कियों को लड़कों जैसी आजादी भी नहीं दी जाती है। कहा जा सकता है कि देश में लड़कियों के पिछड़ेपन के कारणों में समाजीकरण की प्रक्रिया में व्याप्त लैंगिक भेदभाव मुख्य है।

महात्मा गाँधी के अनुसार–'' हमारे समाज में कोई सबसे अधिक हताश हुआ है तो वे स्त्रियाँ ही हैं और इस वजह से हमारा अधःपतन भी हुआ है। स्त्री–पुरूष के बीच जो फर्क प्रकृतिक रूप से है जिसे खुली आँखों से देखा जा सकता है, उसके अलावा मैं किसी किस्म के फर्क को नहीं मानता'' वर्तमान युग को ''वैचारिकता का युग'' कहा जाता है और आज की आधुनिक दुनिया में कोई भी देश नारी के अधिकारों की उपेक्षा नहीं कर सकता। महिला–पुरूष समानता के बिना किसी भी समाज को प्रगतिशील कहना एक आडम्बर ही होगा। शिक्षा ही मानवीय प्रगति का आधार है, जिस देश में शिक्षा सर्वसुलभ होगी, वही देश तेजी से तरक्की कर सकता है। इसलिए बालकों के साथ–साथ बालिकाओं की शिक्षा पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए। वैश्विक स्तर पर भी इस तथ्य को स्वीकार किया गया है कि शिक्षा से सशक्तिकरण होता है। जीवनपर्यन्त व निरन्तर शिक्षा मानव जीवन के स्तर को उन्नत करती है। शिक्षा प्राप्त करना हर बच्चे का मौलिक अधिकार है। शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य का सर्वांगीण विकास होता है। यह तभी सम्भव है जब लड़का–लड़की दोनों को समान रूप से शिक्षा प्रदान की जाये। क्योंकि एक मजबूत शिक्षा प्रत्येक राष्ट्र के विकास और समृद्धि की आधारशिला होती है। अतः आवश्यक है कि सभी को समान रूप से शिक्षा मिले। देश में पिछले एक दशक से शिक्षा को सुदृढ़ करने के लिए आवश्यक कदम भी उठाये जा रहे हैं। अब शिक्षा प्राप्त करना प्रत्येक बच्चे का मौलिक अधिकार बन गया है। विशेष रूप से लड़कियों और बालश्रम करने वाले बच्चों के लिए प्रारंभिक शिक्षा के कार्यक्रम भारत सरकार और संयुक्त राष्ट्र एजेंसियों द्वारा मिलकर चलाये जा रहे हैं।

हम सभी का उत्तरदायित्व है कि समाज में व्याप्त लैंगिक असमानता को दूर किया जाये। इसके लिए जमीनी स्तर पर आवश्यक कदम उठाने होंगे। विद्यालय में बालिकाओं को दाखिला दिलाया जाये। अभिभावकों को नारी जीवन की उपादेयता के बारे में जागरूक किया जाये। देश में जेन्डर सम्बन्धी योजनाओं को क्रियान्वित कर, सरकार के द्वारा नारी सशक्तिकरण पर ध्यान दिया जाना चाहिए। महिलाओं को पुरूषों के समान अधिकार प्रदान किये जाये और उनकी सुरक्षा पर भी ध्यान दिया जाये। स्त्रियों से सम्बन्धित कार्यक्रम व योजनाओं का क्रियान्वयन किया जाये। बालिका शिक्षा के स्तर को बढ़ाया जाये, एवं समाज के लोगों को नारी महत्ता एवं उसकी भूमिका का ज्ञान कराया जाये, ताकि बालिका जीवन को लैंगिक असमानता के शिकार से बचाया जा सके।

◆

डॉ. अनिल कुमार जैन
एवं
जयन्ती गौतम
प्रवक्ता
जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान,
बरूआसागर, झाँसी (उ.प्र.)

वर्तमान बेसिक शिक्षा और चुनौतियाँ

एक समय था जब गुरुओं का स्थान सबसे ऊपर होता था। हर कोई सम्मान की दृष्टि से उन्हें देखता था। उनका आदर सत्कार करता था। गांव में सरकारी स्कूल के पुराने, छड़ी बाले मास्टरजी पेड़ के नीचे बैठकर बच्चों को पढ़ाने का हर संभव प्रयास करते थे। आज उनके पढ़ाये हुए बच्चे, डॉक्टर, इंजीनियर, कलेक्टर और वैज्ञानिक हैं। वहीं कुछ छात्र देश का नेतृत्व कर रहे हैं। लेकिन वर्तमान परिस्थितियाँ बिल्कुल विपरीत हैं। आज कोई भी सम्पन्न व्यक्ति अपने बच्चों को सरकारी विद्यालय में पढ़ाना नहीं चाहता है। इसलिए नहीं कि वहाँ सुविधाओं का आभाव है। उसके बच्चे को गुड़वत्तापूर्ण शिक्षा नहीं मिलेगी बल्कि इसलिए कि उसे लगता है कि ये विद्यालय केवल उन लोगों के लिए रह गये हैं जो अपने बच्चों को एक समय का भोजन नहीं दे सकते हैं, उनके दो जोड़ी कपड़े, स्वेटर, जूता मोजा आदि का खर्चा वहन नहीं कर सकते हैं। समाज में यह गलत भ्रन्ति फैल गयी है कि सरकारी विद्यालय के शिक्षक अपना कार्य नहीं करते, समय से विद्यालय नहीं आते हैं। बच्चों को मन से नहीं पढ़ाते हैं। वास्तव में देखा जाय तो ऐसा नहीं हैं। अधिकाँश शिक्षक विषम परिस्थितियों में भी नियमित अपने विद्यालय जाते हैं और पूर्ण मनोयोग से बच्चों को अपना सर्वश्रेष्ठ देने की कोशिश करते हैं। हाँ कुछ अपवाद हो सकते हैं जो हर जगह होते हैं। केवल चंद लोगों की वजह से हम सारे शिक्षक समाज को दोषी नहीं मान सकते हैं।

विगत वर्षों में अनेक शिक्षकों ने अपने वेतन से विद्यालय का कायाकल्प किया है जिसकी सराहना भी की जाती है। सोशल मीडिया पर रोज किसी न किसी शिक्षक को अपने विद्यालय और बच्चों का स्वरूप बदलते हुए देख कर अच्छा लगता है। ऐसे शिक्षकों से प्रभावित होकर और बेहतर कार्य करने की प्रेरणा मिलती है। एक शिक्षक होने के नाते मेरा मानना है कि शिक्षण बहुत जटिल कार्य है इसे कदापि सरल न समझें। बेसिक शिक्षा में तो ये और भी जटिल हो जाता है क्योंकि यहाँ सभी परिस्थितियाँ बिल्कुल विपरीत हैं। हमें ऐसे बच्चों को शिक्षा देनी होती है जिनमें से अधिकांश बच्चे न तो स्वयं शिक्षा ग्रहण करना चाहते हैं और न ही माता–पिता उनको शिक्षा दिलाने के प्रति सजग रहते हैं। वह शिक्षा के महत्व को नहीं समझते। अधिकांश समय वह बच्चों को घरेलू व कृषि कार्यों में अपने साथ व्यस्त रखते हैं। आज बेसिक शिक्षा एक ऐसी प्रयोगशाला का रूप लेती जा रही है जिसमें

अधिकाँश प्रयोग अपने शुरुआती दौर में ही असफल हो जाते हैं और सिर्फ कागजों पर ही सफल नजर आते हैं। शिक्षक रोज नए शासनादेश के पालन करने के लिए विवश हैं। वो करें तो करें क्या? शासनादेश का पालन करते–करते वो अपने मूल कार्य को ही भूलता जा रहा है और शिक्षण कार्य को छोड़ अन्य सभी कार्य में रुचि ले रहा है। मेरा मानना है कि बेसिक शिक्षा के जो बदलाव कहीं न कहीं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा में बाधक बनते नजर आ रहे हैं उसमें शिक्षक के महत्वपूर्ण सुझाव को दरकिनार किया जा रहा है। शिक्षक के मनोभावों को समझने का प्रयास नहीं किया जाता। शिक्षक पतवार है और छात्र नाव। धरातल पर कार्य करने वाले शिक्षकों का सुझाव लेने व उन्हें महत्व देने की बेसिक शिक्षा को बहुत आवश्यकता है। जरूरत है शिक्षकों को सपोर्ट करने की उन पर विश्वास दिखाने की उन्हें शिक्षण के ज्यादा से ज्यादा अवसर देने की और उनकी जवाबदेही तय करने की। थोपे जाने वाले निरंतर बदलाव शिक्षा की गुणवत्ता को कमजोर बना रहे हैं। शिक्षण को रोचक और प्रभावी बनाने के लिए नवाचार जरूरी हैं लेकिन सीमित रूप में, अधिकता कहीं हमें शिक्षण के मूल उद्देश्यों से भटका न दे।

शिक्षक की श्रेष्ठता इस बात में नहीं है कि वो कितना योग्य है बल्कि इस बात से होती है कि उसने अपनी योग्यता से विद्यालय के बच्चों को किस योग्य बनाया है। वर्तमान समय बेसिक शिक्षा के बदलाव का स्वर्णिम समय साबित हो सकता है। यह वर्तमान सरकार की प्राथमिकता में भी है। विद्यालय के भौतिक परिवेश में पंचायती राज विभाग के सहयोग से बच्चों के लिए मूलभूत सुविधाओं की अवस्थापना की जा रही है। लेकिन शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार केवल शिक्षक ही ला सकता है इसलिये मेरा सभी शिक्षक साथियों से अनुरोध है कि जिस तरह वो स्वयं के बच्चों के भविष्य के प्रति सचेत रहते हैं उसी प्रकार अपने विद्यालय के बच्चों के लिए भी सजग रहते हुए उनके भविष्य को संवारने की पुरजोर कोशिश करते रहें।

◆

राजीव सिंह
प्राथमिक विद्यालय सहजनी,
बहेड़ी, बरेली (उ.प्र.)

अधिगम को स्थायी बनाती है शिक्षण सहायक सामग्री

(प्राथमिक विद्यालय मठिया, विकासक्षेत्र–पुवायां, शाहजहांपुर)

शिक्षा किसी भी देश के समाज का निर्माण करती है। विद्यालयों में बच्चे न केवल किताबी ज्ञान प्राप्त करते हैं बल्कि क्षमा, दया, सहभागिता, स्वच्छता जैसे अनेक नैतिक मूल्यों का विकास भी शिक्षार्थी जीवन में ही होता है। प्राथमिक शिक्षा का व्यक्तित्व निर्माण में महत्वपूर्ण स्थान है। प्रारंम्भिक शिक्षा ही व्यक्ति के जीवन का आधार बनती है। अतः विद्यालय के परिवेश को ऐसे विकसित किया जाए कि बच्चे आनंददाई वातावरण में सहजता से सीख सकें। बेसिक शिक्षा वर्तमान में एक नवीन लक्ष्य, नवीन संकल्प के साथ प्रगति पथ पर अग्रसर है। प्राथमिक विद्यालय के बच्चों के लिए विद्यालय का वातावरण सर्वथा नवीन होता है। वे सीखने सिखाने की सहज प्रक्रिया से जुड़ें, इसके लिए आवश्यक है कि विद्यालय का भौतिक परिवेश उन्हें न केवल आकर्षित करे बल्कि वे उससे कुछ सीख सकें। दीवारों पर की गई सुंदर चित्रकारी वही उचित है जो उन्हें उनके परिवेश से जोड़ने के साथ ही ज्ञान की एक नवीन दुनिया से परिचित कराये। पाठयक्रम आधारित शिक्षण अधिगम सामग्री अर्थात टी.एल.एम. का प्रयोग जहां शिक्षक के कार्य को सहज बनाता है वहीं बच्चों के अधिगम को अधिक सुगम, ग्राह्य व स्थायी बनाता है। सहायक सामग्री चाहे परिवेश से ली गई हो अथवा शिक्षक द्वारा निर्मित हो वह बाल मनोविज्ञान पर आधारित होने के साथ–साथ बच्चों के मन मस्तिष्क में विषय वस्तु की वास्तविक समझ विकसित करने वाली हो। चमकीले व चटख रंग छोटे बच्चों को जल्दी आकर्षित करते हैं। अतः रंगीन सामग्री का निर्माण व प्रयोग कक्षा–कक्ष के वातावरण को अधिक सरस व सहज बना देता है। सहायक सामग्री ऐसी हो जो बच्चों में कौतुहल जगाए और वे रुचि से उसे देखें। शिक्षण अधिगम सामग्री से ऐसे माहौल का निर्माण करें कि बच्चों की सीखने की क्षमता अधिक अवसरों के साथ उत्प्रेरित हो। चीजों को उलटने–पलटने, देखने, छूने से वे अधिक सीख सकते हैं। उन्हें इसके पर्याप्त अवसर दिए जाने चाहिए। सक्रियता के साथ सीखने की प्रेरणा देने वाली सामग्री का प्रयोग बच्चों को विद्यालय आने को प्रेरित तो करेगी ही साथ ही वे शीघ्र व सहज भाव से सीख सकेंगे। प्रदेश सरकार द्वारा चलाए जा रहे महत्वाकांक्षी कार्यक्रम ''मिशन प्रेरणा'' के अंतर्गत भाषा व गणित के जो प्रारंभिक लक्ष्य निर्धारित किए गए है उन लक्ष्यों की संप्राप्ति में भी शिक्षण अधिगम सामग्री का महत्वपूर्ण स्थान है। प्राथमिक कक्षाओं के बच्चों के लिए निर्धारित किए गए लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए विभाग द्वारा विभिन्न रोचक व उपयोगी शिक्षण अधिगम सामग्री उपलब्ध कराई जा रही है जो कक्षा कक्ष को सीखने सिखाने के कक्ष में परिवर्तित कर छात्र–छात्राओं को भाषा व गणित की दक्षताओं को प्राप्त करने में सहायक होगी।

एक अच्छी शिक्षण सामग्री वह है जो कम समय, कम लागत व कम श्रम में तैयार हो तथा बच्चों को सहज उपलब्ध हो। बच्चे स्वयं करके देख सकें, छू सकें व सीख सकें। शिक्षण सामग्री निर्माण में जिन वस्तुओं का प्रयोग किया जाए वह सहज उपलब्ध हों। पुराने शादी के कार्ड, गत्ते के डिब्बे, रंगीन पेपर, पुराने अखबार, पत्र–पत्रिकाएं इस सामग्री के निर्माण का महत्वपूर्ण साधन हो सकते हैं। शिक्षण अधिगम सामग्री के निर्माण में बच्चों की सहभागिता होने से वह अधिक लगाव का अनुभव करेगें। यही नहीं सामग्री के प्रयोग व रखरखाव में भी बच्चों की हिस्सेदारी तय कर देने से वह अधिक जिम्मेदार बनेंगे। पुराने शादी के कार्डो से अक्षर कार्ड, अंक कार्ड, विलोम शब्द, पर्यायवाची शब्द, स्थानीय मान के कार्ड, शब्द बनाओ, कार्ड जोड़ो और सीखो जैसी सामग्री सहजता व सुगमता से बनाई जा सकती है। वही पुरानी पत्रिकाओं अखबारों के चित्रों से उपयोगी सामग्री का निर्माण किया जा सकता है। पुराने डिब्बे, गत्ते के डिब्बे व कागज के लिफाफों से कहानी को मजेदार व मनोरंजक बनाया जा सकता है। चाट के चम्मच व पुरानी मोतियों की मालाएं इकाई दहाई की अवधारणा को स्पष्ट करने के लिए प्रयोग की जा सकती हैं। पत्तियां, कंकड़ आदि सहायक सामग्री के रूप में प्रयोग किए जा सकते हैं।

शिक्षण अधिगम सामग्री ऐसी हो जो, शिक्षण को अधिक प्रभावी बना सके। छात्र–छात्राओं को सीखने में सहजता का अनुभव हो, उनकी अधिकाधिक ज्ञानेन्द्रियां सक्रियता के साथ शिक्षण प्रक्रिया से जुड़ें और सीखी गई विषय वस्तु अधिक सहजता से उनके मन मस्तिष्क में स्थाई आकार ले सके।

आवश्यकतानुसार शिक्षण अधिगम सामग्री का प्रयोग करके शिक्षक अपने छात्रों को स्वाभाविक रूप से सीखने–सिखाने की प्रक्रिया से जोड़ सकते हैं।

◆

अमिता शुक्ला
प्रधानाध्यापक

प्रेरणा

"किसी को किसी कार्य में प्रवृत्त करने की क्रिया या भाव को प्रेरणा कहते हैं।"

प्रेरणा मुख्य रूप से दो तरह की होती है–

1. आंतरिक प्रेरणा
2. बाह्य प्रेरणा

1. आंतरिक प्रेरणा–जब किसी व्यक्ति के अंदर ऐसे भाव स्वयं ही उत्पन्न होने लगे कि दिया गया लक्ष्य मुझे हर हाल में हासिल करना ही होगा और इसे हासिल करने में अब वह व्यक्ति दिन और रात का फर्क भूल जाए यानी उसे केवल अपना लक्ष्य ही दिखता हो और जब तक वह उस लक्ष्य को हासिल नहीं कर लेता अजीब सी बेचैनी या छटपटाहट होती रहती है। इस विशेष परिस्थिति और गत्यात्मक मानसिक अभिप्रेरणा (motivation) को ही आंतरिक प्रेरणा (Inner inspiration) कहा जा सकता है।

किसने सोचा होगा कि ऐसा लड़का जो धनाभाव में दिनभर खेतों में काम करने के उपरांत दूसरे से किताब मांग कर अमेरिका के प्रथम राष्ट्रपति 'जॉर्ज वॉशिंगटन' का जीवन चरित्र पढ़कर आंतरिक प्रेरणा से स्वयं अमेरिका का राष्ट्रपति बन जाएगा। परंतु अपनी आंतरिक प्रेरणा लगन परिश्रम व दृढ़ विश्वास से 'अब्राहम लिंकन ने अमेरिका का सर्वोच्च पद प्राप्त किया।

अब्राहम लिंकन ने कहा था–

"एक पेड़ काटने को मुझे छः घंटे लगेंगे। मैं पहले चार घंटे अपनी कुल्हाड़ी की धार तेज करने में लगाऊंगा और दो घंटे में पेड़ काट दूँगा। क्या कभी ये विश्वास किया जा सकता है कि बचपन की विभिन्न शरारती गतिविधियों में संलिप्त 'थॉमस अल्वा एडिसन' अपने अनुभव लगन व आंतरिक प्रेरणा से एक दिन संसार को रोशन करने हेतु विद्युत बल्ब की खोज कर पाएगा। परंतु उसने ऐसा किया और विद्युत बल्ब का आविष्कार कर पाया और दूसरों के लिए प्रेरणा स्रोत बना।

शायद वह आंतरिक प्रेरणा ही रही होगी जिसने केतली से निकलने वाली भाप को 'भाप का इंजन' बनाने के लिए 'जेम्स वाट' को प्रेरित किया होगा। सेब के पेड़ से धरती पर गिरते हुए सेब के फल से न्यूटन को गुरुत्वीय बल की खोज करने पर विवश किया।

हममें से किसी ने भी यह नहीं सोचा होगा कि एक साधारण परिवार में जन्मा छात्र अपनी आंतरिक प्रेरणा सोच व लगन से भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) तथा रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन (डी.आर.डी.ओ.) में वैज्ञानिक और इंजीनियर का दायित्व संभालते हुए डॉ. ए.पी. जे. अब्दुल कलाम के नाम से भारत के ग्यारहवें (11वें) राष्ट्रपति का पद सुशोभित करेंगे।

ऐसे तमाम अनगिनत उदाहरण हैं जिन्हें हम आंतरिक प्रेरणा के मूल स्रोत के रूप में आत्मसात कर सकते हैं।

2. वाह्य प्रेरणा–एक बार एक व्यक्ति सुकरात से सफलता का रहस्य पूँछने के लिए आया। सुकरात ने कहा कल आना। दूसरे दिन वह व्यक्ति सूर्योदय होते ही सुकरात के पास पहुँचा और सफलता का रहस्य पूछने लगा। सुकरात उस व्यक्ति को लेकर चल दिये। चलते–चलते एक तालाब मिला। सुकरात ने उस व्यक्ति से कहा तुम मेरे साथ–साथ इस तालाब में आओ। सुकरात आगे–आगे और वह व्यक्ति पीछे–पीछे तालाब में अंदर घुसता चला गया। जब गले तक पानी आ गया तब उस व्यक्ति ने पूछा कि सफलता का रहस्य क्या है? सुकरात ने उसका सिर पकड़ा और उसे तालाब में डुबो दिया। काफी देर बाद जब उस व्यक्ति से बिना सांस लिए नहीं रहा गया तब वह छटपटा कर सुकरात को बाहर धकेल कर पानी के ऊपर आ गया और सुकरात को भला बुरा कहने लगा। सुकरात तनिक भी विचलित नहीं हुए और उस व्यक्ति से पूछा "जब आप जल के अंदर थे तब आपको सबसे ज्यादा किस चीज की जरूरत थी?" उस व्यक्ति ने उत्तर दिया "आक्सीजन" सुकरात ने फिर पूछा "ऑक्सीजन के लिए आपने क्या किया?" व्यक्ति बोला "मैंने आप द्वारा किए गए अवरोध को समाप्त करके हर हाल में ऑक्सीजन प्राप्त करने हेतु पूरी ताकत लगा दी।" सुकरात बोले "यही है सफलता का रहस्य, जब आपके अंदर वैसी ही छटपटाहट अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए होगी जैसी जल के अंदर तुम्हें ऑक्सीजन प्राप्त करने के लिए थी, तभी तुम्हें तुम्हारा लक्ष्य यानि सफलता प्राप्त होगी।"

यही है वाह्य प्रेरणा जब हम दूसरों के विचारों एवं कार्यों से प्रभावित होकर स्वयं अपने लक्ष्य साधन में पूरी ऊर्जा, से

लग जायें और लक्ष्य प्राप्ति के बिना अजीब सी छटपटाहट महसूस करने लगे तब समझ लेना चाहिए कि कोई प्रेरणा है जो तुम्हें आगे की ओर कर्तव्य पथ पर धकेल रही है।

एक बार कौटिल्य (चाणक्य) जंगल में एक लड़के को फावड़े से कुछ खोदते हुए एवं जड़ों में मट्ठा डालते हुए देखा कौटिल्य ने उस बालक से पूछा ''हे बालक! तुम कुछ खोदकर मट्ठा जड़ों में क्यूँ डाल रहे हो?'' उस बालक ने उत्तर दिया ''मेरे पैर में कुस चुभ गया है और जब तक मैं धरती से कुस के पौधों को समाप्त नहीं कर दूंगा चैन से नहीं रहूंगा'' कौटिल्य (चाणक्य) ने उस बालक के दृढ़ विश्वास को देखकर उसकी दृढ़ इच्छाशक्ति का सदुपयोग करते हुए उसका सही पथ प्रदर्शन किया। यही बालक उस प्रेरणा से आगे चलकर 'नंद वंश' का नाश करके संपूर्ण उत्तर भारत में 'चंद्रगुप्त मौर्य के नाम से 'मौर्य वंश का संस्थापक बना।

'प्रेरणा और मिशन प्रेरणा का अन्तर सम्बन्ध' हममें से हर किसी को कुछ ना कुछ करने का जज्बा अवश्य देता है। वर्तमान शैक्षिक परिवेश परंपरागत चली आ रही शिक्षा व्यवस्था में कुछ ना कुछ नया जोड़ने की तरफ अग्रसर है। उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा '4 सितंबर, 2019' को शिक्षक दिवस की पूर्व संध्या पर 'मिशन प्रेरणा' की शुरुआत की गयी। उसी संदर्भ में आदरणीय महानिदेशक स्कूल शिक्षा 'श्री विजय किरण आनंद जी ने उत्तर प्रदेश सरकार की इस महत्वाकांक्षी योजना मिशन प्रेरणा के तहत 'मार्च 2022' तक 'उत्तर प्रदेश को प्रेरक प्रदेश' बनाने की घोषणा की है। इसके अंतर्गत उत्तर प्रदेश के सभी 75 जनपदों को एक निर्धारित लक्ष्य 'कक्षा 1 से 5' तक दिया गया है। जिसमें हिंदी (भाषा) के प्रत्येक कक्षा के लिए अलग–अलग कुल 5 लक्ष्य और इसी तरह 'गणित' विषय के लिए भी कक्षा एक से पांच तक कुल 5 लक्ष्य निर्धारित किए गए हैं। विभिन्न जनपदों द्वारा अपने जनपद को प्रेरक जनपद बनाने हेतु 'प्रेरणा घोषणा' करवाकर कार्ययोजना भी जमा करवायी गयी है।

अब जब हमारा लक्ष्य हमारे सामने प्रेरणा लक्ष्य के रूप में है और कार्ययोजना हमारे हाथ में, तो बस आवश्यकता है सिर्फ प्रेरणा की। 'स्वामी विवेकानंद' ने अपनी कविता–

The song of the free
All nature wear one angry frown,
To crush you out-still know, my soul.
You are devine, March on and on,
Nor right or left but to the goal.

शिक्षकों और छात्रों को प्रेरित करने के लिए राज्य परियोजना कार्यालय लखनऊ के गुणवत्ता प्रकोष्ठ द्वारा 'E-Pathshala' के तहत 'मिशन प्रेरणा' पर तैयार किए गए विभिन्न वीडियोज यूट्यूब चैनल पर उपलब्ध है।

शैक्षिक फेसबुक प्लेटफार्म, दूरदर्शन पर सुबह 9.00 बजे से दोपहर 1.00 बजे तक आने वाले विभिन्न कक्षाओं के लिए शैक्षिक कार्यक्रम, रेडियो पर 11.00 a.m. से 12.00 बजे दोपहर तक आने वाले शैक्षिक कार्यक्रम, विभिन्न प्रकार के शैक्षिक पोस्टर, रीड एलांग ऐप और सबसे ज्यादा परियोजना द्वारा विकसित तीन हस्त पुस्तिकाएं ''आधारशिला'', ''ध्यानाकर्षण'' और ''शिक्षणसंग्रह'' जहां एक और शिक्षकों को स्वविकास की प्रेरणा देते हैं वहीं समस्त छात्रों द्वारा इसे आत्मसात कर अपने ज्ञान में वृद्धि की जाती है।

अब हमें अपनी आंतरिक प्रेरणा को जागृत करना होगा और राज्य परियोजना कार्यालय द्वारा निर्देशित व तय की गयी समय सीमा के अंदर ही आदरणीय प्राचार्य जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान जनपद फतेहपुर के मार्गदर्शन व कुशल निर्देशन में जनपद द्वारा घोषित समय सीमा के अंदर ही जनपद फतेहपुर को प्रेरक जनपद बनाने हेतु दिन–रात एक करके पूर्ण मनोयोग से लग जाना चाहिए तभी हमारी असली प्रेरणा का वास्तविक अर्थ निकलेगा और हम विभाग के प्रति अपनी जिम्मेदारी सही सिद्ध कर पाएंगे।

उपरोक्त के संबंध में मैं महान कवि (American Poet) 'Robert', 'Frost' की चार पंक्तियों से अपनी बात को स्पष्ट करना चाहूंगा। इन पंक्तियों को भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू भी अपनी Working Table में हमेशा रखते थे–

The woods are lovely dark and deep,
But I have promises to keep,
And miles to go before I sleep,
And miles to go before sleep.
Robert Frost
"Stopping by Woods on a snowy evening"

◆

जय चंद्र पांडेय
प्रधानाध्यापक
प्राथमिक विद्यालय नक्शारा, ऐरायाँ, फतेहपुर

मोहल्ला क्लास : बच्चों की शिक्षा का सार्थक प्रयास

कोरोना काल में जब चारों ओर अफरा–तफरी का माहौल था। स्कूल कालेज सब बन्द थे। सड़कों पर सन्नाटा था। लोग एक दूसरे से मिलने में भी कतराते थे। उस दौर में बेसिक शिक्षा विभाग के कर्मठ शिक्षकों ने ऐसे बच्चों के लिये जिनके पास एन्ड्रावयड फोन की सुविधा नहीं थी। उनकी शिक्षा जारी रखने के लिये मुहल्लो–मुहल्लो में कुछ बच्चों को एकत्र कर ''मोहल्ला क्लास'' की अनोखी पहल की शुरूआत की। मुहल्ला क्लास में बच्चों को कोरोना गाइड लाइन का पालन करते हुये बैठाकर क्लास लगायी जाती है। शिक्षक अपने साथ ब्लैक बोर्ड, चाक, किताबें और कापियाँ ले जाते हैं। क्लास में बच्चों का पढ़ाना होम वर्क देना और पिछले होमवर्क को चेक करने का कार्य किया जाता है। इस प्रकार की कक्षाओं से बच्चों को बड़ा लाभ मिला है।

जनपद लखनऊ में जिला शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान के प्राचार्य व उप शिक्षा निदेशक डॉ. पवन कुमार सचान और

बेसिक शिक्षा अधिकारी श्री दिनेश कुमार ने शिक्षक व शिक्षिकाओं को मुहल्ला क्लास लगाने के लिये प्रेरित किया है। इस प्रकार की मुहल्ला क्लास प्रदेश के अनेक जिलों में भी लगायी गयी हैं। इनके माध्यम स्कूल बन्द होने के बावजूद उनके घर के आस–पास कुछ बच्चों को एकत्र कर एक दिन में एक से डेढ़ घंटे की 2 से 3 क्लास लगायी जा रही हैं। मुहल्ला क्लास ग्रामीण बच्चों के लिये वरदान सिद्ध हो रही है। बच्चे सुरक्षित माहौल में स्कूल शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। अभिभावक भी अध्यापकों की इस मुहिम में सहयोग कर रहे हैं और शिक्षकों के प्रति सम्मान में वृद्धि हुयी है।

◆

शिक्षकों ने बदल दी क्लास की सूरत

मिसाल : कोरोना काल में मुहल्ला क्लास के जरिये घर–घर लगाई पाठशाला

छात्रों द्वारा "बाल अखबार"

(कन्या उच्चतर प्राथमिक विद्यालय, भूरा विकास खण्ड–कैराना, जनपद–शामली)

कन्या उच्चतर प्राथमिक विद्यालय भूरा विकास खण्ड–कैराना जनपद–शामली में मैने मार्च 2010 में कार्यभार ग्रहण किया था। कार्यभार ग्रहण करते समय मुझे यह देखकर बड़ा दुःख हुआ कि बालिकाओं की शिक्षा को समर्पित इस विद्यालय में नामांकन की स्थिति अच्छी नहीं थी, जो नामांकन होते भी थे उनमें से कई छात्रायें कुछ दिन बाद विद्यालय छोड़कर घर के कामों में व्यस्त हो जाती थीं। इन परिस्थितियों पर निरन्तर विचार करने पर मुझे लगा कि विद्यालय में छात्राओं के लिये रूचिपूर्ण क्रियात्मक गतिविधियों का अभाव है। उबाऊ शैक्षणिक वातावरण के कारण अधिकांश छात्रायें मध्यान्ह भोजन के पश्चात घर वापस जाने के बहाने बनाने लगती थीं। इस समस्या के समाधान के लिये मैंने मध्यान्ह

भोजन के पश्चात छात्राओं के लिये आर्ट एवं क्राफ्ट की कक्षायें शुरू की। आर्ट एवं क्राफ्ट की कक्षाओं में उन्हें अलग–अलग तरह के चित्र बनाना तथा घर के बेकार और अनुपयोगी सामान को कलाकृति के रूप में तैयार करना सिखाने लगी। इस प्रकार की कक्षाओं का असर यह हुआ कि अब छात्रायें स्कूल से जाने का नाम ही नहीं लेती थीं। स्कूल की छात्राओं की कलात्मक अभिरूचि को देखते हुये निजी विद्यालयों की छात्रायें तथा आस–पास के गाँवों की बच्चियाँ भी स्कूल आने लगी। कुछ छात्रायें जो बीच में स्कूल छोड़कर चली गयी थीं वह भी वापस आने लगी हैं।

आर्ट एवं क्राफ्ट कक्षाओं के अतिरिक्त छात्राओं को प्रेरित कर बाल अखबार तैयार करने हेतु उन्हें सिखाया गया।

छात्रायें ने बाल अखबार में खुद सूचनायें लिखती हैं कलाकृतियाँ भी बनाती हैं। हमारे विद्यालय की छात्राओं द्वारा प्रत्येक कक्षा के लिये अलग–अलग बाल अखबार तैयार किया जाता है। जैसे कक्षा–8 की छात्राओं द्वारा **"नया सवेरा"** कक्षा–7 की छात्राओं द्वारा **"उड़ान"** और कक्षा–6 की छात्राओं के अखबार का नाम **"उजाला"** है। इन अखबारों में सूचनाओं के साथ वे अपनी रूचि के अनुसार कवितायें व कहानियाँ भी लिखती हैं।

समय–समय पर छात्राओं द्वारा तैयार किये गये आर्ट एवं क्राफ्ट तथा अखबारों की अभिभावकों के समक्ष प्रदर्शनी भी लगायी जाती है, जिसका सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। अभिभावक भी विद्यालय की गतिविधियों में बढ़–चढ़ कर हिस्सा लेते हैं। अब हमारे विद्यालय में छात्राओं की संख्या में काफी वृद्धि हुयी है। साथ ही ड्राप आउट भी बिल्कुल समाप्त हो गया है।

◆

अलका शर्मा
सहायक अध्यापक

खेल से शिक्षा की ओर : एक सफल प्रयोग

(प्राथमिक विद्यालय नाला–2, कांधला, शामली)

हम अपने विद्यालयों में प्राय देखते हैं कि कक्षा या विद्यालय में कुछ बच्चे ऐसे होते हैं जो विद्यालय तो आते हैं पर पढ़ने में रुचि नहीं लेते या कभी विद्यालय आते हैं कभी नहीं, या कुछ बच्चे अधिक शरारती होते हैं। बस कुछ ऐसी ही चुनौतियाँ मेरे भी सामने थी। एक दिन मैंने अपने विद्यालय में देखा एक बच्ची बहुत शरारती है, जिसका पढ़ाई में बिल्कुल भी मन नहीं लगता था। वह विद्यालय आने में भी आनाकानी करती थी। मैंने एक दिन देखा कि वह बहुत तेजी से दौड़ रही है विद्यालय का कोई भी बच्चा उसे पकड़ नहीं पा रहा है। मुझे लगा कि इस बच्ची में कुछ अलग ही बात है यह पढ़ाई में तो नहीं है पर खेल में बहुत कुछ कर सकती है। उसी पल मैंने मन बनाया क्यों ना इस बच्ची और ऐसे अन्य बच्चों की प्रतिभा को खेल के जरिए बाहर निकाला जाए। उस बच्ची का नाम टीना था। मैंने अगले दिन से ही बच्चों को पढ़ाई के साथ–साथ खेलों का प्रशिक्षण देना शुरू किया। उन्हें उनकी पसंद और क्षमता के अनुसार प्रशिक्षित करना शुरू किया, जिसका सकारात्मक फल मेरे सामने आना शुरू हो गया। जैसा मैंने सोचा हां बिल्कुल वैसा ही हुआ। धीरे–धीरे इस कार्य में मेरे समस्त स्टाफ ने भी सहयोग किया। सभी बच्चे पूरी ऊर्जा के साथ रोज विद्यालय आने लगे। कोई भी बच्चा छुट्टी नहीं करता था बल्कि उनका प्रयास रहता कि रविवार को भी मैं विद्यालय आऊँ और उन्हें खेलने का मौका मिले। बच्चे बड़े ही खुश रहने लगे। मैंने उनके सामने अपनी बात रखी की खेल के साथ–साथ पढ़ाई भी होगी, उसके बाद ही खेल की प्रैक्टिस करोगे। बच्चे उस दिन से मन लगाकर पढ़ने भी लगे और पहले के मुकाबले बच्चों की उपस्थिति भी ज्यादा हो गई दूसरी ओर बच्चे खेल में अच्छा प्रदर्शन करने लगे। 2019 में हमारे विद्यालय को कबड्डी, ऊँची कूद, लंबी कूद, 200, 400, 100 और 50 मीटर की रेस में लड़के एवं लड़कियों दोनों वर्गों में गोल्ड मेडल प्राप्त हुआ। खेल के साथ–साथ सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भी हमारे विद्यालय के बच्चों को गोल्ड मेडल प्राप्त हुआ है।

इन्हीं बच्चों में से हमारे विद्यालय की रेसर टीना दो बार स्टेट गेम्स के लिए चुनी गई।मंडल स्तर पर गोल्ड मेडल प्राप्त होने से एक और बात सामने आई कि विद्यालय के बच्चों में गजब का आत्मविश्वास बढ़ गया था। मुझे आज भी वह पल याद है जब हमारे विद्यालय में जिलाधिकारी महोदय द्वारा गाँव की समस्याओं को सुनने के लिये खुली बैठक का आयोजन किया गया था। बैठक में जिलाधिकारी महोदय गाँव वालों की समस्याएँ सुन रहे थे। एक समस्या हमारी टीना की भी थी उसका कच्चा घर बारिश में गिर गया था। अब उसके पास सर छुपाने की भी जगह नहीं थी। उसके माता–पिता डीएम साहब के सामने अपनी बात नहीं कह पा रहे थे, तभी टीना झट से खड़ी हो गई और अपनी समस्या डीएम साहब के सामने रखी। डीएम साहब उसके आत्मविश्वास को देखकर खुश हुये और उन्होंने पूरे गांव के सामने टीना को पुरस्कृत किया और उसका घर बनवाने का आश्वासन दिया। खेल के माध्यम से किये गये मेरे इस प्रयास से मुझे एक नई राह मिली। जो बच्चे विद्यालय में शरारती थे, सबसे पीछे रहते थे वह आज विद्यालय व जनपद की शान बन चुके हैं। मुझे यह अहसास हुआ कि हम खेल के माध्यम से बच्चों का शारीरिक व मानसिक विकास कर सकते हैं। खेल बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए बहुत आवश्यक है। हम बच्चों को खेल से शिक्षा की ओर बड़ी सरलता से ला सकते हैं। खेल के माध्यम से शिक्षा की ओर उन्मुखीकरण का मुझे व्यक्तिगत रूप से लाभ मिला है। राज्य स्तरीय खेल में सहयोग वह प्रोत्साहन के लिए मुझे तीन बार प्रशस्ति पत्र प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

◆

नीरू नैन
सहायक अध्यापिका

साँप सीढ़ी के माध्यम शिक्षण का अनूठा प्रयास

डॉ. अरुण कुमार गुप्ता, उच्च प्राथमिक विद्यालय निजामपुर (गौरिया) विकास खण्ड ददरौल–जनपद शाहजहाँपुर ने खेल–खेल में बच्चों को साफ–सफाई और पोषण की जानकारी देने के लिये साँप सीढ़ी के खेल को परिवर्तित कर बच्चों को शिक्षित करने के लिये दो नवाचार विकसित किये हैं। दोनों नवाचारों के माध्यम से बच्चे खेल–खेल में साफ–सफाई से फायदे और पोषण का ज्ञान हासिल कर लेते हैं। इन नवाचारों के लिये डॉ. गुप्ता को एन. सी.ई.आर.टी. द्वारा नवाचारों के प्रयोग के लिये सम्मानित किया गया है।

डॉ. गुप्ता के दोनों नवाचार इस प्रकार कार्य करते हैं–

खूब खेलो स्वस्थ रहो–इस खेल से बच्चों में साफ–सफाई व शरीर की स्वच्छता की समझ आसानी से विकसित होती है। यह खेल बच्चे और अभिभावक दोनों खेल सकते हैं। एक साथ दो से चार बच्चे इस खेल में भाग ले सकते हैं। इसके लिए आप लूडो के पासे का प्रयोग कर सकते हैं। एक बच्चा खेल प्रारम्भ करता है और वह बच्चा पासा फेंकता है। जितने अंक पासे के आयेंगे, वह गिनतियों के माध्यम से आगे बढ़ता रहेगा। बारी–बारी से सभी बच्वें पासा फेकतें हुए गिनतियों के माध्यम से आगे बढ़ते हैं। साफ–सफाई से क्या–क्या लाभ है, बच्वें उन्हें सीखते हुए सीढ़ियों के माध्यम से ऊपर बढ़ते हैं जबकि साफ–सफाई न रखने से आपको क्या–क्या हानि हो सकती है उन्हें सीखते हुए साँप के माध्यह से वे नीचे भी आते हैं।

बच्चों को बार–बार उन्हें साफ–सफाई के लाभ बताने नहीं पड़ते है बल्कि वे स्वयं ही उन्हें सीख जाते हैं।

खूब खेलो सेहतमंद रहो–इस खेल के माध्यम से बच्चों में पोषण के प्रति समझ आसानी से बनायी जा सकती है। यह खेल बच्चे एवं अभिभावक आसानी से खेल सकते हैं। एक साथ दो से चार बच्चे खेल सकते हैं। खेल पासे से खेला जायेगा। आप लूडो के पासे का प्रयोग कर सकते हैं। एक बच्चा खेल को प्रारम्भ करता है और वह पासा फेंकता है। जितने अंक आयेंगे वह गिनतियों में बढ़ता रहता है। बारी–बारी से सभी बच्चे पॉसा फेंकते हुए आगे बढ़ते हैं। भोजन में किन–किन भोज्य पदार्थों को खाकर आप स्वस्थ बनेगें उन्हें आप सीखते हुए सीढ़ी के माध्यम से ऊपर बढ़ते हैं जबकि किन–किन भोज्य पदार्थों को हमें नहीं खाना चाहिए उन्हें जानते हुए आप साँप के माध्यम से नीचे की ओर आ जाते हैं।

बच्चों को बार–बार भोज्य पदार्थों के खाने के बारे में बताना नहीं पड़ता है बल्कि वे स्वयं ही उन्हें सीख जाते हैं।

◆

डॉ. अरूण कुमार गुप्ता
शाहजहाँपुर
उ.प्र.वि. निजामपुर गौरिया,
वि.क्षे. ददरौल, शाहजहाँपुर

कविता

कंचे-कौड़ी तिनके-मनके भर लाती है,
नन्ही पीढ़ी विद्यालय से घर जाती है।

पटरी, पेंसिल, कोण, तिकोने धरे बैग में,
कभी-कभी पढ़ने से इच्छा भर जाती है।

पढ़ना-लिखना चाहे कितना भी नीरस हो,
किन्तु पता है किस्मत ज़रा सँवर जाती है।

देख-रेख के बिना मेरे भारत नक्शा,
चुहिया धीरे-धीरे चित्र कुतर जाती है।

गीली मिट्टी से हैं चाहे जो गढ़ लेना,
जिस भी साँचे में ढालोगे ढल जाती है।

नीति माधुरी, चौपाई दोहों छंदों से
अम्मा के चेहरे पर खुशी उभर जाती है।

भारत की संतानों के सत्संकल्पों से,
अखिल धरा पर स्नेहिल रीति पसर जाती है।।

◆

अखिलेश चन्द्र पाण्डेय
सहायक अध्यापक
उच्च प्राथमिक विद्यालय मानधाता (1 से 8)
मानधाता, प्रतापगढ़ (उ.प्र.)

कबड्डी (कविता)

खेल कबड्डी सुनकर,
सारे बच्चे खुश हो जाते हैं।
हम भी खेलेंगे खेलेंगे,
कहते हमसे जाते हैं।।
खेल कबड्डी........
न्यारा कैसा खेल कबड्डी,
सब मिल धूम मचाते हैं।
असलम राघव डेविड लक्खा,
सब मिल टीम बनाते हैं।।
खेल कबड्डी........
सात-सात के दो दल बनते,
पाला बीच बनाते हैं।
बीस-बीस मिनटों की पाली,
रेड-डिफेंट कर जाते हैं।
खेल कबड्डी........
छल कबड्डी, छल कबड्डी,
कहते सब खो जाते हैं।
इसको मारा देखो पकड़ा,
बात यही बतलाते हैं।।
खेल कबड्डी........
भारत का है खेल कबड्डी
जन प्रिय हो समझाते हैं।
विश्व में नाम कबड्डी हो,
हम ऐसे स्वप्न सजाते हैं।।
खेल कबड्डी........

◆

नवनीत कुमार शुक्ल
सहायक अध्यापक
प्राथमिक विद्यालय भैरवां द्वितीय,
हसवा, फतेहपुर (उ.प्र.)

सुर्खियों में बेसिक शिक्षा

69,000 शिक्षक भर्ती में बची सीटों की होगी तीसरी काउंसिलिंग

58,285 शिक्षकों की जिलों में तैनाती 25 से

मिली बड़ी राहत : परिषद सचिव ने जारी किया कार्यक्रम

36,590

21,695

सरकारी स्कूल के लिए सरिता ने बहाई प्रेरणा की धार

36590 सहायक शिक्षकों को 25 से आवंटित होंगे स्कूल

सीसीएल के बाद शिक्षकों की ऑनलाइन नियुक्ति अनिवार्य

पांच दिसंबर 2020 को मिले थे नियुक्ति पत्र, चयनित शिक्षकों को स्कूल आवंटन 25 से 27 जनवरी तक

नवनियुक्त 36590 शिक्षकों को जल्द मिलेगी तैनाती

खण्ड शिक्षा अधिकारियों के तबादले नए सत्र में होंगे

त्रुटि सुधार में जिला बदला तो चयन से बाहर होंगे अभ्यर्थी

69000 शिक्षक भर्ती

शिक्षामित्रों को झटका

शिक्षक भर्ती में त्रुटिपूर्ण आवेदन के 1300 मामले पहुंचे शासन

एनआइओएस से डीएलएड मान्य

शिक्षक भर्ती परीक्षा

छह से आठवीं तक के स्कूल 10 से खुलेंगे

पांचवीं तक के स्कूल पहली मार्च से खोलने का आदेश

लौटेगी रौनक : मुख्यमंत्री योगी ने दिए निर्देश, प्रदेश में अब पहले की तरह संचालित होंगी शिक्षण संस्थान

माध्यमिक की कक्षाएं 9 फरवरी से पूर्ण रूप से होंगी संचालित

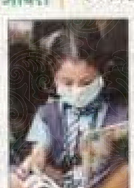

प्रधानाध्यापक व सहायक अध्यापक की अलग लिखित परीक्षा

एडेड जूनियर हाईस्कूल शिक्षक भर्ती

सहायक अध्यापक व प्रधानाध्यापक भर्ती की गाइडलाइन जारी

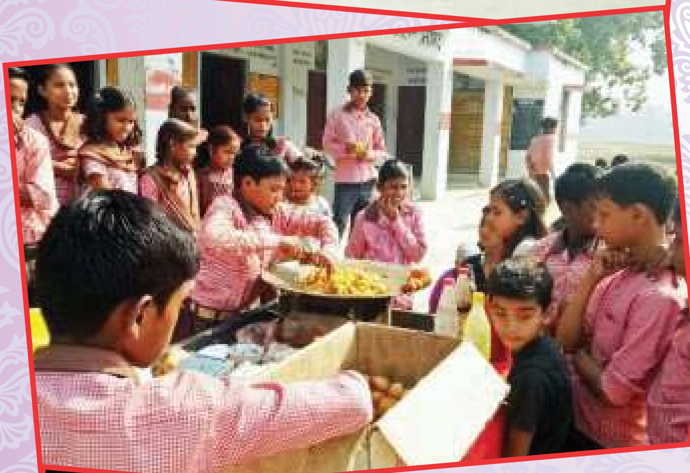

हम बनाएंगे
प्रेरक प्रदेश

मिशन प्रेरणा

उत्तर प्रदेश, प्रेरक प्रदेश

मुद्रक : प्रकाश पैकेजर्स, 257—गोलागंज, लखनऊ